अस्मि
VOL.1 ; ISSUE-1
Year 2020-2021

# ASMI: The Journal on Gender Sensitisation

RAM LAL ANAND COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI
BENITO JUAREZ MARG, NEW DELHI

# Asmi

## Editors

**Dr. Shruti Anand**
**Ms Deepshikha Kumari**

## Student Editors

***Vikash Tripathi***
***Palak Arora***
***Shravani Upadhyay***
***Anjali***

## *LOGO MADE BY*

***Bhoomi Chandwaani***
B.Com(h) 3rd year

## *COVER*

***Palak Arora***

## *LAYOUT*

***Vikash Tripathi***

नोट- इस अकादमिक ई–जर्नल का उददेश्य सामाजिक संवेदीकरण है। प्रकाशित लेख विद्यार्थियों के निजी विचार हैं।लेखों के साथ प्रयुक्त चित्र, कैरीकेचर और कार्टून गूगल, पिनट्रेस्ट आदि स्रोतों से साभार लिए गये हैं।

# अस्मि

## जेंडर संवेदीकरण समिति, रामलाल आनंद कालेज

## परिचय

**~मैं हूं**

'अस्मि'- रामलाल आनंद कॉलेज की लैंगिक अस्मिता संवेदीकरण समिति जेंडर सेंसिटाइजेशन की दिशा में एक कदम है। अस्मि शब्द संस्कृत के धातुरूप 'अस्' से निर्मित है जिसका अर्थ- सन्दर्भ है- मेरा अस्तित्व है। अपने नाम की तरह ही इस समिति का उद्देश्य सभी के अस्तित्व को मान्यता और महत्त्व दिलाना है। हमारी यह समिति सर्व-समावेशीकरण और सह-अस्तित्व के विचार को प्रस्तावित करती है। इसका उद्देश्य कॉलेज में विशेषकर युवा छात्रों में लैंगिक विभेद सम्बंधी मुद्दों और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना है। नयी पीढ़ी में लैंगिक अस्मिता के प्रति उठने वाली सहज उत्सुकताओं और असहज प्रश्नों को संबोधित करना भी इस समिति का दायित्व है। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए यह समिति जेंडर सम्बन्धी विषयों पर विविध छात्र केन्द्रित गतिविधियों का आयोजन करती है जैसे- विविध रंग-कला आयोजन रचनात्मक लेखन, पोस्टर निर्माण, क्षेत्र सर्वेक्षण संगोष्ठी, वैचारिक सम्मेलन, कार्यशालाएं, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आदि। छात्रों की रचनात्मकता और बौद्धिकता को प्रोत्साहित करने के लिये ई-जर्नल अस्मि इस समिति का एक महत्वपूर्ण मंच है। ये सभी गतिविधियों विद्यार्थियों में एक बेहतर और उदार मनुष्य बनने का साहस और संघर्ष की चेतना विकसित करती है। इस समिति का हमारा लक्ष्य विद्यार्थियों को एक लैंगिक पहचान बनने से पहले एक मनुष्य बनना सिखाना है।

## अस्मि का संकल्प

हम, 'आस्मि जेंडर संवेदीकरण समिति के सदस्य लैंगिक समता की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम संकल्प करते है कि एक समावेशी, समतामूलक एवं न्यायसंगत सामाजिक संस्कृति की रचना में अपने विचार, भाषा और आचरण से समर्पित रहेंगे।

### अस्मि के मूल्य

समता
स्वतंत्रता
सृजन

### अस्मि के उद्देश्य

1. लैंगिक समता की स्थापना के लिए विचार एवं भाषा में 'अस्मि' के मूल्यों के अनुसार आचरण।
2. सामाजिक परिवेश में लैंगिक समता के प्रति जागरूकता का प्रसार।
3. सामाजिक समरसता के लिए वैविध्य के प्रति आदर का भाव।
4. सकारत्मक बदलाव के लिए अपने व्यवहार और सोच से प्रेरक उदाहरण की प्रस्तुति।
5. संवाद की गुणवत्ता के लिए समावेशी अवसरों का सृजन ।
6. नेतृत्व और रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन।

# Asmi

## Gender Sensitization Committee of RLAC

## Introduction

~ I Exist

ASMI- (The Gender Sensitization Committee of RLAC) is pledged to make the students aware about gender related issues and individual's rights irrespective of their gender identities. The name ASMI is significant in defining the aim of this society. The word ASMI means "I am or I exist." Etymologically it comes from Sanskrit *dhaatopadh* "AS" which means – "to exist." The gender sensitization club of RLAC runs with the motto that everyone's existence is significant in the same way as ours to us. It promotes the idea of inclusiveness and harmonious co-existence among each entity in the world for a better future. The members of ASMI organize various student centric activities such as performing arts competitions, poster making and slogan writings, field survey, talks, seminars, conferences and workshops on numerous aspects of gender issues. The society has started an E-journal on gender sensitization for the students to give a creative platform for their understanding of gender related issues. Our purpose is to make the students a better human being first. By focusing on the harsh realities which in general are swept beneath the carpet, students are enabled to question gender related concerns open-mindedly and discard the ills of antiquity. The various components of society consist of Gender Champions, Members and E-Journal Editors.

## Asmi Oath

We, the members of ASMI, are committed to promote gender equality among us. We pledge to devote ourselves in creating an inclusive, equal and just society through our idea, speech and conduct.

## Principles of ASMI

Equality
Liberty
Creativity

## Aim and Objective

1.To uphold gender equality by following three principles of ASMI in thought and conduct.
2.To spread awareness on gender issues prevailing in social surrounding.
3.To admire and encourage diversity for social harmony.
4.To be exemplary in speech and action for bringing a positive change.
5.To create opportunities for discourse of quality on gender related topics.
6.To exhibit leadership and creative traits in dealing with gender issues.

# प्राचार्य की कलम से

मैं जेंडर सेन्सिटाइज़ेशन समिति के सदस्यों का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होने लैंगिक समानता, सशक्तिकरण एवं विकास की दिशा में कार्य करने हेतु स्वयं को समर्पित किया। लैंगिक संवेदीकरण हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के प्रस्तावों के आलोक में एक औपचारिक समिति की आवश्यकता महसूस की जा रही थी ताकि 16 वर्ष या अधिक के छात्र-छात्राएँ, उन लैंगिक असमानताओं को समझ सकें जो अलग-अलग स्तरों पर लिंग अनुपात, श्रम-कानूनों, पोषण-स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा एवं पेशेवर विसंगतियों के रूप में समाज में व्याप्त है। एक समाज एवं देश में स्वतंत्रता, बन्धुता एवं समानता की स्थापना के उद्दात लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु एक उन्नत सोच का होना सबसे बड़ी आवश्यकता है। पुरुष एवं स्त्री के बीच विभेद से तो हम परिचित थे, किन्तु विषमता की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका पता थर्ड जेंडर, जिसे हाल ही में कानूनी मान्यता मिली है, के प्रति हमारे संवेदनहीन रवैंयें को देख कर और भी स्पष्ट हो जाता है। मानव के रूप में जीने के लिए मानव मूल्यों की महती आवश्यकता होती है और मेरा विश्वास है कि जेंडर सेन्सिटाइज़ेशन समिति इसी दिशा में बीजारोपण और प्रस्फुटन का व्यापक उददेश्य लेकर चलेगी और सफल होगी।

इस दिशा मे समिति का 'अस्मि' ई-जर्नल के रूप में किया गया प्रयास सराहनीय है। आशा है, भविष्य में यह जर्नल एक शोध जर्नल का रूप लेगा। पाठकों और ई-जर्नल के छात्र संपादकों एवं शिक्षक संपादकों को मेरी विशेष शुभकामनाएं।

**डॉ राकेश कुमार गुप्ता**

**प्रधानाचार्य**

# प्रिय पाठकों ,

अस्मि का पहला अंक आपको सौंपते हुए मुझे बहुत ही आनंद और संतोष का अनुभव हो रहा है। अस्मि रामलाल आनंद कॉलेज की जेंडर संवेदीकरण समिति से जुडी एक रचनात्मक पत्रिका है। हमारे देश का अस्तित्व कई व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्र अस्मिताओं से बना है और हमारा समाज संविधान और शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से इन्ही अस्मिताओं की अक्षुण्णता को सुरक्षित रखने का दायित्व निभाता रहा है। अस्मि- ई जर्नल इसी कड़ी में एक प्रयास है। इसका उद्देश्य सामाजिक भिन्नताओं के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना और समाज की शिराओं में पैठी बहुविध गैरबराबरी को ख़त्म कर समता के विचार का प्रसार करना तो है ही, छात्रों की बौद्धिकता को प्रोत्साहित करने हेतु अबोध शब्दों को रचनात्मक औज़ार में परिवर्तित करने के लिए एक प्रयोगात्मक मंच प्रदान करना भी है। 'अस्मि' का कलेवर विद्यार्थियों की निजी अभिव्यक्ति से बना है। अतः रचनाओं का कच्चापन ही इनकी सच्चाई का प्रमाण है। 'अस्मि' का पहला अंक कॉलेज की ओर से अपने अनगढ़पन के साथ लैंगिक संवेदीकरण की दिशा में पहला कदम है, अपेक्षा है कि भविष्य में इस पत्रिका की उपयोगिता, रचनात्मकता, पाठकों से मिलने वाली प्रतिक्रिया और स्नेह इसे एक शोध जर्नल के रूप में विकसित करेंगे।

**त्वदीयं वस्तु गोविन्दम तुभ्यमेव समर्पये |**

**सादर**

**डॉ श्रुति आनंद**

## *Dear Readers,*

In academics we discuss, examine and analyse various socio-political and cultural issues which have been deterrent to the multifaceted growth of a society. We look for a possible remedy to eliminate the long exercised ills on the name of culture and traditions. Gender is one such area that requires a closer attention in the field of academics. Even though several attempts from the part of government and judiciary have been made to achieve equality yet, we haven't been able to eradicate gender based injustice that prevails in the mind of people.

ASMI, The Gender Sensitization Committee of Ram Lal Anand College has launched its E-journal to inspire our students by providing them a platform where they can express their views on gender issues in different literary forms; fiction and nonfiction such as short stories, poems, essays, articles, memoirs and so on. The name ASMI is derived from Sanskrit *dhaatopadh* which means "I Exist". The word can be playfully used phonetically in English transcription /ʌsmi/-suggestive of inclusiveness as the goal of a mutually enhancing society between I and We irrespective of our diverse identities. ASMI, the E-journal encourages the young minds to contribute with their creativity that can reflect on the varied experiences and observations on gender based inequalities that one might come across in everyday life.

We believe that creativity is a meditative process. Writing as a part of creative endeavour leads to broaden our critical insight. When a young mind writes on issue as complex as gender, they aren't just exercising their creativity but also exploring the topic to understand the deeply rooted power-relation in a Patriarchal society. Furthermore, the readership of ASMI involves undergraduate students, who, by reading the contributions of their fellow students could develop social consciousness and sensibility on gender related issues. ASMI- the E Journal of RLAC, sincerely hopes that this small step would let the student's creativity flow in asserting their ideas towards significant change in the society.

**Ms. Deepshikha Kumari**

# विषय सूची- Content list


अस्मि समिति- परिचय 1

Asmi Committee- Introduction 2

प्राचार्य की कलम से 3

संपादकीय 4

Editoral 5

छात्र संपादक- Student Edtiors 9,10

## Artical- लेख

1. Is Gender a social construct ? 11
- Shravani Upadhyay BA(H) Eng 2Y

2. क्या लैंगिक अस्मिता एक सामाजिक निर्मिती हैं? 12
- अंजलि बीए(हिंदी) 2वर्ष

3. Gender Equality 13
- Palak Arora B.Com(H) 2Y

4. लैंगिक समता और समाज में इसका व्यवहार 15
-नीरज बीए(हिंदी) 2वर्ष

## Poem-कविताएं

5. किन्नर 17
-सेजल बजाज बीएससी स्टेटिस्टिक्स 2वर्ष

6. woMEN 18
-Shweta Singh B.Com(H) 1Y

7. बेटियां 19
-सावी गुप्ता बीए प्रोग्राम 2वर्ष

बोलो नजरें क्यों चुराते हो। 19
-मनीष कुमार बीए(ऑ) हिंदी 3वर्ष

## Artical- लेख

8. Color not Character 20
-Shivangi Garg B.Sc(H) Comp. Sc.
9. The Pink we see 21
- -Poojita Shrivastava BMS 3Y
10. भेदभाव नहीं शक्ति का आधार बने पिंक 22
-
-श्वेता कुमारी बीए(ऑ)हिंदी 2वर्ष
11. Pinks and Blues 23
- -Aparna Luthra BA Programme
12. गुलाबी रंग का पिंजरा 24
-अमित बीए(ऑ)हिंदी 3वर्ष
13. Is Pink only a color? 26
-Arushi B.Sc(H) Comp. Sc.
14. Pink isn't a color, it's an attitude 27
-Neha Sharma BA(H) Eng.
15. जेंडर कलर पेयरिंग 28
-दिव्या व्दिवेदी बीए(हिंदी)हिंदी 3वर्ष
16. Don't forget VIBGYOR 30
-Kavya BA Programme
17. Gender of Toys 31
-Kuntal Yadav BA(H) Eng.

## Stories and Poems- कहानी और कविताएं

18. कपड़ों के रंग का अर्थशास्त्र 33
-नंदिनी लवानियां बीए राजनैतिक विज्ञान 2वर्ष
19. Maru's Black closet 35
-Aditi Aggarwal BA(H) English
20. गुलाबी रंग का निशान 36
-वंदिता चांग्रानी बीएससी स्टेटिस्टिक्स 2वर्ष
21. She hated Pink 37
-Ashish Tripathi B.Sc(H) Comp. Sc.
22. पिंक, सिर्फ एक रंग नहीं 39
-हिमांशु बीए(ऑ)हिंदी

23.Speaking Out Loud 40
- Ruparna Chakarvary BA(H) Eng 1Y
24. नारी 42
- नीरज बीए(ऑ)हिंदी
25. In the Dreams 43
- Kshitiz Kumar Singh BA Programme 2Y

## Language disscusion- भाषा विमर्श

26. भाषा का लैंगिक पूर्वाग्रह 45
- सुधीर जागीड बीजेएमसी 2वर्ष
27. Gender - language bais 46
- Madhav Kumar B.Sc(H) Statistics 2Y
28. व्याकरणिक लिंग का सामाजिक प्रयोग 48
- गीतू कत्याल बीजेएमसी 2वर्ष
29. भाषा का लैंगिक भेदभाव 51
- विकास त्रिपाठी बीजेएमसी 2वर्ष

## Stories and Poems- कहानी और कविताएं

30. The Role of Movies and TV shows in Shaping Gender Roles 53
- Kalyani Bhatnagar BA Programme 1Y
31. बचपन से हो लैंगिक संवेदीकरण 55
- आशु बीए(ऑ)हिंदी 3वर्ष
32. नारी 57
- श्री कृष्ण पटेल बीए(ऑ) अंग्रेजी 2वर्ष
33. यादें 58
- शिवानी मिश्रा बीजेएमसी 1वर्ष

# एक नई पहल

जेंडर और अस्मिता, 21वीं सदी का सबसे बड़ा मुद्दा है। सदियों से चली आ रही व्यवस्था ने एक विषम समाज का निर्माण किया है। इस व्यवस्था में एक जेंडर अन्य सभी वर्गों के ऊपर स्थापित कर दिया गया है। राम लाल आनंद कॉलेज में जेंडर संवेदीकरण समिति का गठन इसी विषमता को चिंहित करने की ओर एक कदम है। इस समिति का लक्ष्य कॉलेज के विभिन्न क्षेत्रों में, विशेषकर छात्रों के बीच जेंडर के प्रति संवेदना बढ़ाना है। राम लाल आनंद कॉलेज ने जेंडर इक्वालिटी की तरफ़ कार्य करते हुए, कॉलेज की जेंडर संवेदीकरण समिति- अस्मि द्वारा कॉलेज में कुछ प्रतियोगिता कराई। छात्र-छात्राओं को अस्मि ई-पत्रिका का हिस्सा बनने का अवसर दिया। साथ ही लोगो निर्माण प्रतियोगिता और कवर डिज़ाइन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। नए विद्यार्थियों को जेंडर चैंपियन बनने का मौका देकर कॉलेज में लैंगिक समानता को निश्चित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि हमारे समाज में जेंडर असमान है। पर, अक्सर हम इस बात को जानने के बावजूद बदलाव के लिए कुछ कर नहीं पाते। इसका कारण है, विषय की जटिलता का ज्ञान न होना। अगर हमें पता है कि समाज में लैंगिक पूर्वाग्रह है, तो इसे दूर करने के लिए हमें पूर्वाग्रह के हर पहलू को उजागर करना होगा। इसके लिए हमें उस विषय के बारे में एक समझ बनानी पड़ेगी। ई-पत्रिका के पहले संस्करण में शामिल किया गये विषय हमारे उद्देश्य को पूर्णतः प्रमाणित करते हैं। जेंडर असंतुलन की चर्चा पत्रिका के हर हिस्से में की गई है। इस चर्चा में हमने कुछ सामान्य सामाजिक औजारों को रेखांकित किया है। इनमें सबसे प्रमुख हैं- भाषा और रंग। इस धरती को जीवन निर्वाह योग्य बनाने में रंगों का बड़ा योगदान रहा है। पर हमने इस रचनात्मक माध्यम को भी लैंगिक आधार पर बांट दिए। शायद यही कारण है कि आज एलजीबीटीक्यू आन्दोलन ने सभी रंगों को अपना निशान बना लिया है। हमारा दूसरा विषय भाषा के लैंगिक भेदभाव को रेखांकित करता है। भारतीय और विदेशी भाषाओं ने महिला समाज को कैसे दोयम बनाने के प्रयास किए हैं, इसका विस्तृत वर्णन आपको इस पत्रिका में मिलेगा। पत्रिका को रोचक और मनोरंजक बनाएं रखने के लिए कविता और कहानी जैसी विधाओं को भी स्थान दिया गया है।

इस पत्रिका के द्वारा अस्मि समिति ने समानता की ओर एक पहल की है। इस पहल में आप सभी का सहयोग हमारे लिए अमूल्य है।

अंजलि, विकास त्रिपाठी

# A Step Towards Understanding Gender

The complex concept of gender, pushed on by our precursors and traditions, has experienced waves of fluctuation throughout the ages. Patriarchy, strict gender roles and the perception of binary gender system has always taken its strong stance on considering females as the secondary concern and denying the subject of gender identity spectrum any room to bloom. Gender sensitization is fundamental for the recognition of gender-based disparities as consciousness, awareness and acknowledgement of these gender issues are not only crucial for social refinement but also ending crimes related to it. And it was in this spirit that led Ram Lal Anand's Gender Sensitization Society to launch its E-journal- Asmi—a step towards understanding gender and how it plays out in our everyday living via pencraft.

*"Let us pick up our books & pens, they are our most powerful weapons."*

ASMI-the gender sensitization journal of RLAC aims to empower its readers to be more open-minded, rational and unbiased in their thoughts and actions. The journal is built on the experiences we faced and explains the importance of gender sensitization in our society.

In this first issue, we have some great contributions from students of our college who have aimed to empower the suppressed sections of our society through their literature and I hope it helps them unlock their true potential.

The journal mainly discusses social stigma & gender inequality in our society. It also discusses the role of colours & our daily language in widening this gender gap in the minds of our people. It is a platform that provides a voice to the unheard, neglected thoughts of many empowered minds.

I hope that within these inspiring pages of ASMI, you will discover your inspiration.

Palak Arora, Shravani Upadhyay

# Is Gender a social Construct?

**Shravani Upadhyay**

***"You couldn't look at a brain and say, 'Oh that's of a boy, or that's of a girl."***

**– Gina Rippon (professor of Cognitive Neuroimaging at Aston University)**

From the moment a child's sex is assigned, their entire identity is planned out– from the way they are treated, observed, perceived to how they must behave, act in public, and even how to think. But these impositions are the result of socially constructed ideas about the set of roles a particular sex performs. Also known as gender and indicating to gender roles, these preposterous earmarkings are burdensome and set limits to our individual and social integrity. Although in common language usage gender and sex are often used indifferently, both the terms have their own distinction by the virtue of dictionaries and academic disciplines. While sex refers to the biological differences, gender is the social operation of sexual differences. It is usually a conception of oneself as male or female but for many, the gender they identify with doesn't go with the gender they were assigned at birth. Having being subjected to these standards, gender is said to be a social construct because its shared meaning is repeatedly fostered by the society and so they appear to be natural and not crafted. Society creates these sets of unspoken attributes of being a male or a female and expects us to conform to different beliefs and roles based on our sex. This can also consequently connote how stereotypes come into existence.

***Dancing from the south***
***Cloudy cool and gray***
***Pregnant with rainchild***

***At dawn she gives birth to gentle mist***
***Flowers bow with wet sustenance***
***Luminescence all around.***

**– "Female rain" by Laura Tohe**

Gender affects a person in both individualistic as well as socialistic levels. Its impact is especially visible on the daily through the distinguishing use of language, symbols, etc. The assignment of colours to the genders at home, the primary learning institution for a being, is chiefly discerning. Blue for the boys and pink for the girls restricts the choices and wants of an individual. "Boys can't cry," "don't cry like a girl," the pay gap between the two genders, disregarding the bride's choice of groom for marriages, burdening the male populace with the responsibility of their entire family, not "allowing" women to work for themselves, female foeticide, etc. are all repercussions of gender roles and their constraints. It also doesn't captivate itself in only one sphere. Gender and gender roles, issues go through a wide spectrum of similar other identity domains— race, class, etc. and sustains, materialises accordingly. People are impacted regardless of their beliefs. Let us consider men who do not support sexism but may passively benefit from a sexist society. It is also more common for women to cross the boundaries of attires than men. It is common for women to wear jeans, trousers, pants, a clothing piece designed specifically for men in the past, while it is not for men to wear dresses, skirts, makeup, etc. This is why it is good to see the change permeating through our social norms slowly and people attempting to challenge the prevailing medieval patterns. Gender is a form of identity and is meant to free a person, not bind them in someone else's visions.

# क्या लैंगिक अस्मिता एक सामाजिक निर्मिती है?

अंजलि

फोटो: गूगल

हम 21वीं शताब्दी में जी रहे हैं, लेकिन आज भी एक बेटा पैदा होने पर खुशी का माहौल छा जाता है और यदि एक बेटी का जन्म हो तो सब शांत हो जाते हैं। लड़के से इतना प्यार कि लड़को के जन्म कि चाह में, हम प्राचीन काल से ही लड़कियों को जन्म के समय या जन्म से पहले ही मारते आ रहे हैं। अगर किसी सौभाग्य से बेटी बच जाये तो जीवनभर उसके साथ भेदभाव के अनेक तरीके ढूंढ लेते हैं। समाज अपनी व्यवस्था के आधार पर पुरुषों और महिलाओं के कार्यों और व्यवहारों को परिभाषित करता है, जबकि लिंग आदमी और औरत को परिभाषित करता है। यह जैविक और शारीरिक आधार पर किया जाता है। सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पुरुष और महिलाओं के बीच शक्ति का संबंध है। यहां पुरुष को महिला से श्रेष्ठ माना जाता है। इस तरह 'लिंग' को मानव निर्मित सिद्धांत समझना चाहिए। जबकि 'सेक्स' मानव की प्राकृतिक या जैविक विशेषता है। लैंगिक असामनता को सामान्य शब्दों में इस तरह परिभाषित किया जा सकता है कि लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव होता है और समाज में परंपरागत रूप से महिलाओं को कमज़ोर जाति/वर्ग माना जाता है।

भारतीय समाज में लैंगिक असमानता का मूल कारण इसकी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में निहित है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री 'सिल्विया वाल्बे' के अनुसार, "पितृसत्ता सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था है, जिनमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है, उसका दमन करता है और शोषण करता है।" महिलाओं का शोषण भारतीय समाज की सदियों पुरानी व्यवस्था का अंग है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अपनी वैधता और स्वीकृति हमारे धार्मिक विश्वासों से प्राप्त करती है, चाहे वो हिन्दू, मुस्लिम या कोई अन्य धर्म ही क्यों न हो।

लड़की को बचपन से शिक्षित करना अभी भी एक बुरा निवेश माना जाता है, क्योंकि एक दिन उसकी शादी होगी और उसे पिता के घर को छोड़कर दूसरे घर जाना पड़ेगा, इसलिए लड़कियां अच्छी शिक्षा के अभाव में वर्तमान नौकरियों में कौशल की माँग को पूरा करने में असक्षम हो जाती है। हालाकि प्रत्येक साल हाईस्कूल और इंटरमीडिएट में लड़कियों का परिणाम लड़कों से अच्छा होता है। अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि महिलाओं के साथ असामनता और भेदभाव का व्यवहार समाज में, घर में और घर के बाहर विभिन्न स्तरों पर किया जाता रहा है।

# Gender Equity

Photos: Google images

**Palak Arora**

Being born and brought up in India, I consider gender equity has always been the need of the hour. We need to have a provision of fairness and justice in the distribution of benefits and responsibilities between men, women and trans-genders.

Women in India have been stripped of their rights and have been considered inferior for a long period. Transgenders, on the other hand, were not just treated inequal by society but even by the constit Unlike ancient eras, in the modern era, women are considered dependent and are usually objectified and controlled by men (not by all, but the majority of them).

In the past few years, successful attempts have been made to bring equity in the Indian society, not just for women but also for the third gender, that we didn't talk about earlier. For example- Recently, women were allowed to enter Haji Ali Dargah at Mumbai; the equal right-to-worship was restored.

In 2019, The Transgender Persons (Protection of Rights) Act, was enforced to protect the rights of transgender people and, to ensure their welfare. Of the late non-government organisations have started various programmes and awareness camps to fight this social stigma.

We often use equality and equity interchangeably, but, gender equity, unlike gender equality, focuses on uplifting the more suppressed sections of the society first & along with that protecting the rights of all. To highlight this distinct feature here's an example: Every human irrespective of their gender have an equal opportunity to sit in a metro. That is gender equality, whereas the concept of identifying that women and men have different needs, power and reserving a section of seats for women and senior citizens is gender equity.

Gender equity identifies and addresses these differences in a manner that rectifies the imbalance between genders. Thus gender equity is the path that'll lead us to gender equality.

We as in society have started our journey towards gender equity, having said that, we are not only concentrating on the atrocities faced by women & transgenders, but also on the ones faced by men. Of the late, rise in fake complaints against men has raised the need to protect humanity and not just one section of the society. Misuse of power to justice has made it necessary for us to shift our focus on breaking the shackles of differentiation based on gender & has arisen the urgent need to verify facts before declaring someone guilty.

As it is rightly said,"Injustice anywhere is a threat to justice everywhere". A-lot of amendments and legal rulings to restore equality in all dimensions have passed, but their social acceptance remains a task. For example- In the case of Sabarimala Temple, women were earlier forbidden to enter the premises. Even though in 2018, a judgement was passed, by the Supreme Court of India that allows all Hindu pilgrims regardless of their gender to enter the temple; it is still not accepted & enforced by the temple authorities, priests and local natives.

The protests continue in-the-hope that one-day women will attain their equal right to worship at Sabarimala and similar other temples. The journey is long, but the goal is in each step, and we will not stop until we reach the end.

# लैंगिक समता और समाज में इसका व्यवहार

नीरज

फोटो: गूगल

महिला और पुरूष समाज के मूल आधार हैं। समानता, एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वो नींव है, जिसपर विकास रूपी इमारत बनाई जा सकती है। जिस प्रकार तराजू के दोनों तरफ बराबर भार रखने पर वह संतुलित होता है। ठीक उसी तरह, किसी भी समाज व राष्ट्र में संतुलन बनाने के लिए जरूरी है कि वहाँ पुरूषों तथा स्त्रियों के मध्य लैंगिक समानता स्थापित की जाये। भारत जहाँ एक ओर आर्थिक और राजनैतिक प्रगति की ओर अग्रसर है, वहीं देश में आज भी लैंगिक असमानता की स्थिति गंभीर बनी हुई है।

वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक ने वैश्विक स्तर पर भी लैंगिक आसमानता को समाप्त करने में सैकड़ों वर्ष लगने की संभावना व्यक्त की है। इन्ही परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अमेरीका की राजनीतिज्ञ हेलरी क्लिंटन ने कहा कि,"महिलाएं संसार में सबसे अप्रयुक्त भंडार हैं।" किसी समाज की प्रगति का मानक केवल वहाँ का परिणात्मक विकास नहीं होना चाहिए। समाज के विकास में प्रतिभाग कर रहे सभी व्यक्तियों के बीच, उस विकास का समावेशन भी होना जरूरी है। इसी परिदृश्य में नव-विकासवादियों ने विकास की नई परिभाषा में वित्तीय, सामाजिक और राजनैतिक समावेशन को आत्मसात किया है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति प्राचीन या वैदिक काल में सुदृढ थी। उस समय महिलाओं को सभा और समिति जैसी समाजिक संस्थाओं में समान प्रतिनिधित्व मिलता था। इसके अतिरिक्त अपाला और लोपामुद्रा जैसी महिलाओं ने वेदों की रचना में भी योगदान दिया। लेकिन परवर्ती काल में महिलाओं की स्थिति लगातार कमजोर होती गई। इसके पश्चात् मध्यकाल तक महिलाओं की स्थिति लगातार खराब बनी रही।

ऐसी परिस्थितियों में, आधुनिक काल के कुछ बुध्दिजीवियों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान लैंगिक समानता हेतु किये गए प्रयासों से महिला समानता की नवीन अवधारणा का उद्भव हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् निर्मित भारतीय संविधान में भी महिलाओं के सशक्तीकरण से संबंधित विभिन्न प्रवधान किये गए।

हम जानते हैं कि लैंगिक असमानता बड़ी गंभीर समस्या है। भारत में इसका प्रभाव को समाप्त करने के लिए कुछ प्रयास हो रहे हैं। समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे परिर्वतन आ रहा है। इसके परिणाम स्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है। तीन तलाक जैसे मुद्दे पर सरकार तथा न्यायालय की सक्रियता के कारण महिलाओं को उनका अधिकार प्राप्त हो रहा है। राजनैतिक प्रतिभागिता के क्षेत्र में भारत लगातार अच्छा प्रयास कर रहा है। इसी के परिणाम स्वरूप वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक-२०२० और भागीदारी मानक पर अन्य बिंदुओं की अपेक्षा भारत को १८वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। मंत्रिमंडल में महिलाओं की भागीदारी पहले से बढ़कर २३ प्रतिशत हो गई है तथा इसमें भारत, विश्व में ६९वें स्थान पर है। बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं, वन स्टॉप सेंटर, महिला हेल्पलाइन योजना और महिला शक्ति केंद्र जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का प्रयास किया जा रहा है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणाम स्वरूप लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षणिक नामांकन में प्रगति देखी जा रही है।

लैंगिक समानता का सिध्दांत भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक सिध्दांतों में प्रतिपादित है। संविधान न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है, अपितु राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने की शक्तियां भी प्रदान करता है। प्रकृति द्वारा किसी भी प्रकार का लैंगिक विभेद नहीं किया जाता है। समाज में प्रचलित कुछ तथ्य जैसे- महिलाएं, पुरूषों की अपेक्षा जैविक रूप से कमजोर होती है, केवल भ्रांतियां हैं। दरअसल, महिलाओं के विशिष्ट जैविक अंतर, विभेद नहीं बल्कि प्रकृति प्रदत्त विशेषता है। इसमें समाज का सद्भाव और सृजन निहित है।

# किन्नर

सेजल बजाज

लिंग त्रुटि में पैदा होने पर उसका
समाज अनोखा स्वांग रचाता है।
रौंदते हुए झूठी परंपरा में
उससे तालियां का व्यापार सजवाता है।

माथे पर बिंदी, हाथ में कंगन
रूप अपना ऐसे वो संवारता है।
जिस्म किसी और का, वाणी किसी और की
कुछ इस तरह, अपनी व्यथा से हारता है।

कितने खिलौने तो छिन गए।
तब आम ज़िन्दगी की तृष्णा पालता है।
फिर भी अपनी किस्मत कोसता हुआ,
एक पिंजरे में ज़िन्दगी गुजारता हैं।

अपनी खुशियों में आमंत्रित कर उसको
घर गुलजार करवाता है।
यह भूल की ईश्वर का वह सृजन
मनुष्य उसको धिक्कारता है।

उड़ने की तमन्ना लिए,
जब दूसरों के लिए नाचता है।
फरियाद पूरी करते-करते सबकी,
तब आखिर में अपने सपनों का गलत बनाता है।

वह बेरहम नज़रों में भी
अपना अस्तित्व छांटता है।
वह किन्नर है साहब,
अपनी मन्नतों का कत्ल कर भी
लोगों को दुआएं बांटता है।

फोटो: द इंडियन एक्सप्रेस, बिऔएफ

# woMAN

Shweta Singh

Standing in the white gown
Getting pics clicked from down;
Posing for the Vogue with a balloon and smile
Ladies and gentlemen, he's Harry Styles.

The gown touched the ground
But the model's gender couldn't be bound;
He was looking better than a model
No one believes me! Then you can just Google.

The Vogue history said you can't be solo on the cover
Wearing gown he's a do-er;
For men and women, equality is a victory
And in the white dress, he changed history.

Most said to him bring back masculinity
Posing in a gown isn't a thing of dignity;
But clothing doesn't define gender and beauty
Women or Men why does it matter if you support humanity.

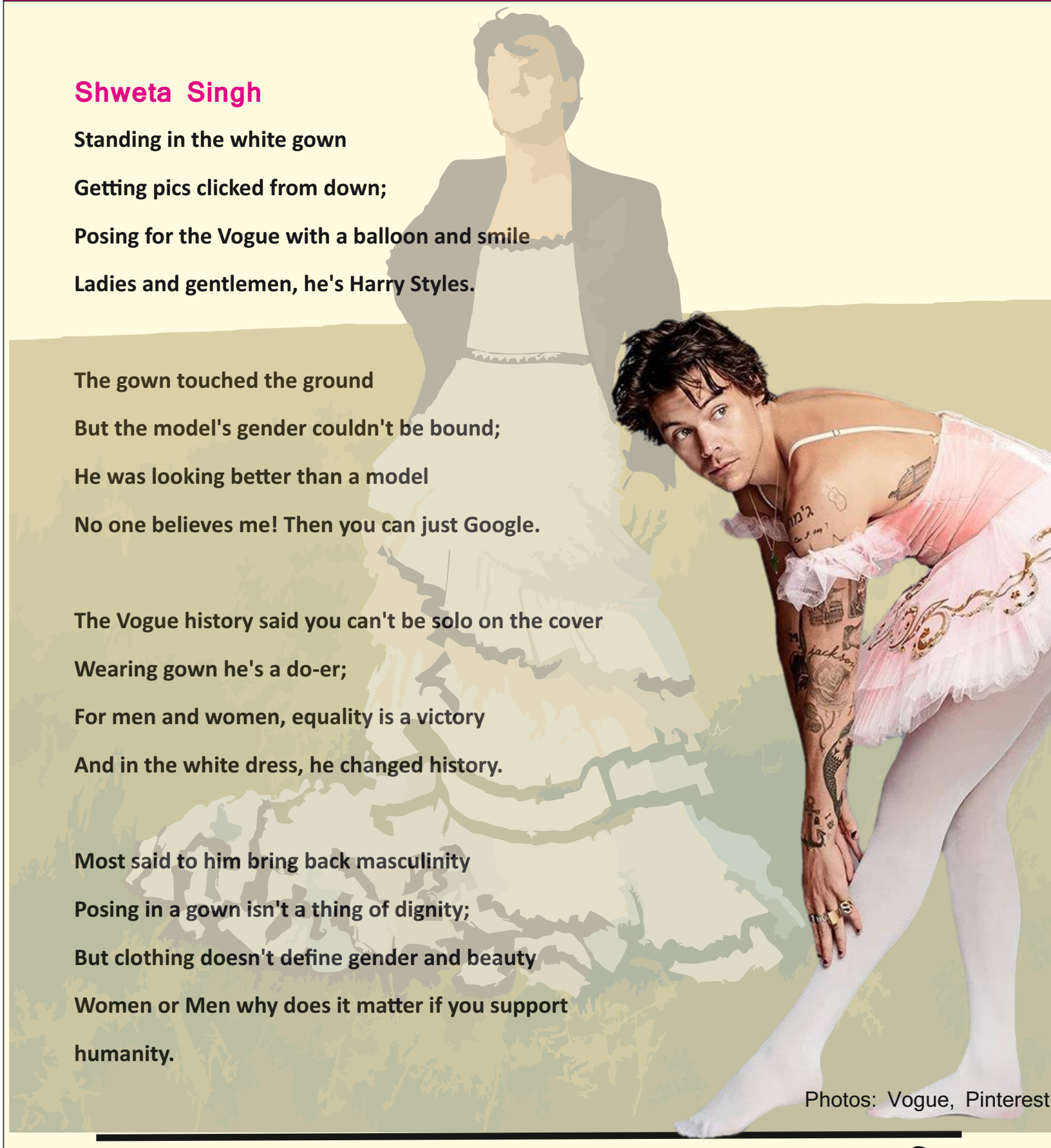

Photos: Vogue, Pinterest

# बेटियां

सावी गुप्ता

ना जाने कितने रिश्तो में बंधी होती हैं बेटियां,
हजारों मुसिबतों को झेल कर भी, खुश रहती हैं बेटियां।
हर मां-बाप की शान होती हैं बेटियां।
अंधेरे घर में रोंशनी की किरण होती हैं बेटियां।
बेटी बनकर घर आंगन महकाती हैं,
बहन बनकर भाई की कलाई सहलाती हैं।
पत्नी बनकर सुख-दुख में साथ नभाती हैं,
कितने रिश्तो को एक साथ निभाती है बेटियां।
और दुख सह कर भी कलियों की तरह खिल जाती हैं बेटियां।
एक नहीं दो घर की लाज बचाती हैं बेटियां।
आये मुसीबत देश पर तो जान की बाजी भी लगाती हैं, बेटियां।

# बोलो नज़रें क्यों चुराते हो।

मनीष कुमार

बेटी, बहन, मां ये सब तो एक ही है,
तुम ये क्यों भूल जाते हो।
इनको समानता देने से क्यों कतराते हो,
बोलो नज़रें क्यों चुराते हो।
एक झांसी की रानी जैसी बेटी,
अपने देश के लिए चाहते हो।
एक उच्च स्तर की खिलाड़ी भी तुम चाहते हो।
देश का नाम रोशन करें ऐसी बेटी चाहते हो,
लेकिन ऐसी बेटी के बाप क्यों नहीं बनना चाहते हो।
बोलो नज़रे क्यों चुराते हो।
वैदिक काल में भी थी समानता,
ये क्यों भूल जाते हो।
इन्हें देव का स्थान मिला पुराणों में,
ये क्यों भूल जाते हो।
बोलो नज़रें क्यों चुराते हों।
मां को छोड़ वृद्ध आश्रम में,
उनका प्रेम भी भूल जाते हो ,
वो स्त्री भी मनुष्य हैं,वस्तु नहीं
ये क्यों भूल जाते हो।
बोलो नज़रें क्यों चुराते हो।

फोटो: गूगल

# Color Not Character

photos: google images

Shivangi Garg

***We all know that there are so many colours. Even a rainbow is made-up of 'seven colours'. But it seems that there is only a pink colour in the case of girls. I don't know exactly, why is it so?***

Just think and ask yourself, what is the first thought that came to your mind when you heard the word 'pink' and focus on the word 'first thought'.

Now if we to talk about the majority of us, we are like 'pink' means girls because a major segment of this gender likes this colour. But again ask yourself, is it right to correlate a gender with a colour?

The society has allotted a colour for each gender, but we forget that the colour is genderless. Many times due to social stigma, we compel our children to like a particular colour. Like in the case of girls, people usually choose pink toys, dresses, accessories for them. Their bathtub, towel, bed, cradle, pillow, etc. are also pink. Is pink the only colour in the entire universe?

This stigma is not only confined to girls but also targets the boys. A boy since childhood is compelled to like blue. Most of their toys and dresses are blue.

Now you will think that 'what if pink is for girls and blue is for boys?' Then what's the matter? What's the big deal? The answer to this whole thing is 'Feminism'. Assigning colours to babies enforces a role that they are confined to grow and fit in. Pink is considered as a sensitive and feminine colour which starts defining girl's character, their thinking and limitations.

Since pink is a colour of girls, they need to conform its defining characteristics, irrespective of their individuality. It is a baseless and irritational concept which has steeped in the feudalistic mindset of the society since ages.They become the victims of the 'norms' which define their thoughts and actions.

There is a pressing need to treat a woman as an individual as they have their own choices, needs and desires and never judge them based on colour and the same with boys. Our society bounds boys to like 'blue', they cannot like 'pink', and if they did they are considered weak and are referred to as 'not manly enough'.

Do you think a choice of colour should be a factor to determine a person's character or behaviour? Ask yourself. Is it right? And if you think it isn't right. Then congratulations!! Pink is just a colour or a way for us to define someones character entirely depends on us.

We should stop this act of defining people based on their choices if we want a world with fewer stereotypes, less discrimination, less sexism and less prejudice.

# The Pink we See

Photos: Google images

Poojita Shrivastava

Linking colours to genders is not a recent phenomenon. Since a very long time, people were assigning pink colour to girls and blue or black to boys. Pink colour is overwhelmingly associated with delicacy and femininity. Little girls are given pink coloured clothes, their rooms are painted pink, their choice of accessories are mostly pink. Girls are handed kitchen sets and boys are given doctor sets, hot wheels, etc. When you think about the colour pink, you are conjuring up images of little girls in pink dresses, with pink toys like barbie or a Disney princess in a pretty gown. All around the world, by 1890s and early 20th century and even till date, manufacturers attempt to sell more children's and infants clothes by colour-coding them. For example, a small pack of Kinder Joy for girls has pink colour in it and the blue coloured one has 'for boys' written on it.

But the fact to ponder upon is checking whether it is in any way harmful or beneficial or does it even have an impact.

Yes, it does have a grave impact on the upbringing of both boys and girls. A general impact that has been noticed in girls is that they become more home-bound, sensitive than what they were. Girls and boys are not different from each other (except biologically) at young ages. But all these gender-related stigmas, when inflicted upon both, become different emotionally and mentally. Boys become more athletic and girls tend to remain comfortable in their comfort zones. Though, later on, they can't remain inside their comfort zone for long.

Let us now view this from a different perspective. We all know that nowadays, the environment is not safe for women. Even in public areas, girls, women are harassed and molested and the government has done negligible amount of work to reduce this plight. In such a situation, it is not at all advisable for girls to be sensitive. Once girls grow up, they do not remain sensitive. But their transition is not easy from being sensitive, home-bound to independent and daring ladies. If they are raised equally, they won't face this problem of transition.

Another aspect of it is seen in boys. If they are wearing something in pink, they are stereotyped for being feminine or being 'gay'. Associating something as general as a colour to gender roles is creating a ridge between the two genders and in a way, moving away from our goal of gender equality.

# भेदभाव नहीं शक्ति का आधार बने पिंक

फोटो: गल्फ न्यूज

श्वेता कुमारी

पिंक मात्र एक रंग नहीं है। समकालीन परिवेश में पिंक रंग नारी सशक्तिकरण के रंग के रूप में उभर कर सामने आया है। पिंक रंग को युवावस्था की अधिकतर कन्याओं द्वारा पसंद किए जाने के कारण महिलाओं की पहचान से जोड़ कर रख दिया गया है। इसके अलावा पिंक रंग के साथ महिला पसंद जैसे कुछ शब्दों को जोड़ दिया गया है। हम यह जानते हैं कि सामान्य दौर में जहां लड़का और लड़की के भेदभाव रहित समाज को बनाने व पुनर्गठित करने का प्रयास किया जा रहा है। महिलाओं को सशक्त करने के विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। उन्हें पुरुषों के समान लाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उसी बीच, कहीं ना कहीं महिलाओं को सामाजिक कुदृष्टि व कु-वचनों का सामना भी करना पड़ रहा है। ऐसे में जब पिंक रंग का सहारा भी लिया जाता है और जब कोई नारी किसी दूसरे रंग को अपनी पसंद बताती है, तब उसे यह भी कह कर चिढ़ाया जाता है कि यह रंग तो लड़कों का है, तुम लड़की हो और अन्य लड़कियों कि तरह पिंक रंग के ही कपड़े व वस्तुओं का इस्तेमाल करो। सामान्य जीवन में इस्तेमाल होने वाली कई वस्तुएं जैसे- यदि किसी की गाड़ी का रंग पिंक होता है तो दूर से ही उसका अनुमान यह लगाया जाता है कि यह किसी लड़की की ही गाड़ी होगी। इसी के साथ अन्य कई उदाहरण भी हमारे समाज में व्याप्त हैं। परंतु मैं इसके सख्त खिलाफ हूं। कोई भी रंग किसी भी लैंगिक भेदभाव का आधार नहीं हो सकता। मैं समाज में व्याप्त इन सभी अफवाहों का विरोध व खंडन करती हूं।

# Pinks and Blues

Aparna Luthra

Going back to my childhood days, I remember dressing myself up in all pink for my birthday parties. I had insisted my mother to buy me a pink barbie doll. BUT WHY PINK? I had never raised this thought until now when I came across this question- 'IS PINK JUST A COLOR?' I asked myself, “did I really like this colour or was I wearing it just because I had seen other girls wearing the same?”

All these questions bubbling up in my mind clearly demonstrate that PINK is not just a colour.

**WHY HAS MY BROTHER NEVER WANTED A PINK DRESS? WHY AT A GENDER REVEALING CEREMONY, THE COLOUR BLUE IS ISSUED TO INDICATE A BOY AND PINK FOR A GIRL? WHY DO PEOPLE MOCK BOYS FOR WEARING PINK?**

Pink, being a combination of red and white, has wide ranging shades from carnation pink to fuchsia pink to solid pink and many more. Similar to its diverse shades, its symbolism is also intricate. Pink, as for many, signifies love and romance, care, tenderness, acceptance, calmness and femininity. Yes, I said “FEMININITY”.

Right from our childhood, there is a notion created in our society to portray a girl in pink. And when I forced myself to think about it, I realized that this colour association might not be a serendipitous event. It might have been because girls are often expected to be calm, composed, forgiving and caring. Therefore, the best colour to which we can associate them with is pink. Today we can see many examples justifying the stand of pink being a feminine colour. Metros— one of the most commonly used means of transport in certain metropolitan cities— have a coach dedicated to women with seats painted in pink. And all things that require to indicate boys and girls have blue and pink as their respective colours. “Breast Cancer Charities” around the world use pink coloured ribbons to symbolize support for people suffering from breast cancer and promote awareness for the disease. Yes, “people” includes both men and women, because both the sexes run through the risk of suffering from breast cancer. The last example clearly shows the constructed mindset that pink has to be the colour of females. And our “MASS MEDIA” with their cartoons, movies, shows have left no stone unturned in promoting this fact. All the girls portrayed in the movies of “BARBIE DOLL, MINNIE MOUSE, and SHIZUKA IN DOREMON” are dressed in pink.

After citing the above examples, there is a clear understanding that pink is not just a colour. It is rather a colour of femininity. But with this conclusion, I would also like to add that the world is changing. People are now open to new ideas. The notion of pink being a colour for girls is slowly fading away. I can now see the patriarchal society not only dressing up in pink but also cherishing it. Men are no longer being mocked at for wearing pink and women are seen dressed up in a rainbow of colours and not just the mixture of white and red. And this really gives me a sense of satisfaction because deep inside, we all wanted this association of genders with colours to be eradicated.

At last, I would like to say that life is a big canvas. Throw in all the colourful colours you can, to paint it beautifully. Do not just restrict yourself and others to PINKS and BLUES.

# गुलाबी रंग का पिंजरा

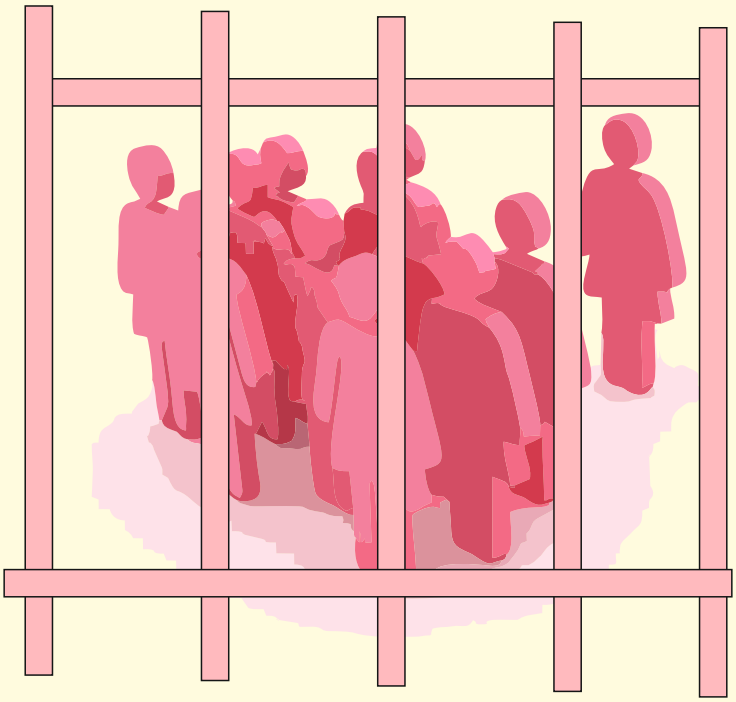

फोटो: गूगल

अमित

कोई भी रंग मूलतः सिर्फ एक रंग होता है, जिसे हमारा मस्तिष्क हमारी आंखों के द्वारा अनुभव करता है। समय के साथ 'सभ्य' होने के क्रम में मनुष्य ने कई प्राकृतिक वस्तुओं और जीवों की अपने समाज या कबीले के प्रतीक रूप में प्रयोग करना शुरू कर दिया। समय के साथ स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर बढ़ती हुई, मनुष्य बुद्धि ने रंगों को भी इस काम में लिया। अलग-अलग रंगों को अलग-अलग भावों के साथ जोड़कर देखा जाने लगा। इसी तरह मजहबों को अपने-अपने रंग मिले। राष्ट्रध्वजों के रंग, राष्ट्र की प्रकृति व उनकी मान्यताओं के आधार पर निर्धारित किये गए।

इन्ही असंख्य रंगों में से रंग है, पिंक(गुलाबी)। यह एक खूबसूरत रंग है, जो आंखों को सुकून देता है। यह हममें एक सुखद अहसास को जन्म देता है। इस पिंक रंग की इसी छवि ने इसे जोड़ा एक खास मानवीय समुदाय के साथ(स्त्रियों के साथ)। हम सब ने तमाम गाने सुन रखे है- चाहे वह गुलाबी होठों पर हो या गोरे गालों पर। हम तमाम टीवी ऐड देख रहे हैं ऐसे उत्पादों के जो औरत को खूबसूरत बनाने में मददगार होने का दावा करते है, अर्थात उन्हें गोरे गाल और गुलाबी होठ देने का दावा करते हैं। जिससे एक बात बचपन से ही समझ आ गई थी कि, औरत को खूबसूरत होना चाहिए, और खूबसूरती के दो पैमाने हैं- पहला गोरे गाल और दूसरा गुलाबी होठ।

गोरे गालों की चर्चा फिर कभी, लेकिन अभी हम गुलाबी होठों की बात करेंगे, क्योंकि यह गुलाबी रंग कुछ अधिक ही प्रभावी रहा है औरतों की छवि गढ़ने में। यह गुलाबी रंग होठों से धीरे-धीरे इनके गालों पर चढ़ा। जब हम अपनी एक समझ विकसित कर पाने की उम्र में पहुंचे, हमने कल्पना की एक सम्पूर्ण गोरे शरीर पर हल्का गुलाबी आवरण चढ़ा हो एक कविता रची, हमने इसे स्त्री माना, और इस पिंक को अपने मस्तिष्क में एक प्रतीक रूप में छाप लिया। स्त्री के प्रतीक रूप में।

पर मर्द का क्या रंग हो? सवाल तो यह भी बनता है, परन्तु इस प्रश्न पर किसी का ध्यान नहीं पहुंच सका। हालांकि कुछ रंग पुरुषों के लिए भी निर्धारित हुए पर उनमें वो पिंक वाली बात नहीं थी। ऐसा शायद इसलिए हुआ कि हमारे समाज ने मान लिया कि पुरुष का रंग या खूबसूरती मायने नहीं रखती। मायने रखता है, तो उसका पौरुष।

फिर स्त्रियों के पौरूष का क्या? उनकी क्षमताओं का क्या? क्या उनकी नियति गुलाबी रंगमय होकर पुरुषों को शीतलता प्रदान करना मात्र ही है? बहराल हमने पहले तो इसी गुलाबी रंग में स्त्री को रंगा। फिर उनके चारों ओर इसी पिंक रंग का एक पिंजरा बना दिया। उनके सम्पूर्ण विचारों को इसी पिजरें में क़ैद कर दिया। इस तरह यह पिंक(गुलाबी) रंग उनके नाम पर पेटेंट हो गया। पुरुषों के लिए तो यह रंग यूं वर्जित हुआ कि मानो यह रंग पहनने या पसंद होने मात्र से उनका सारा पौरुष क्षीण न हो जाए, इसलिए उन्हें रंगों के जंजाल से दूर रखा गया, और कहीं स्त्रियों के अंदर पौरुष ना जाग जाए, इस कारण उन्हें गुलाबी रंग में पिंजरे में कैद कर आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्वतंत्रताओं से भी वंचित कर दिया गया। यह पिंक अब केवल एक रंग नहीं रहा, अब यह एक ऐसा पिंजरा बन चुका था, जो स्त्रियों की सोच को बस इसी रंग की सीमाओं में ही बांध लेने की क्षमता रखता था।

जैसा, मैंने शुरुआत में कहा कि पिंक मूलतः एक रंग ही था, अन्य सभी रंगों की तरह अपने आप में तटस्थ और खूबसूरत। इस रंग को इतना खतरनाक तो एक विचार ने बनाया। जो सभ्य समाज के बीच मौजूद एक असभ्य मस्तिष्क से निकला था। आज जिसे पुरुषवादी या पितृसत्तात्मक विचारधारा कहा जाता है। इसका प्रभाव हैरतंगेज रूप से इतना व्यापक हुआ कि सभ्य समाज के तमाम असभ्य मस्तिष्क तुरंत ही इससे जुड़ गए। फिर उन्होंने तमाम सभ्य मस्तिष्कों को भी अपने प्रभाव में जकड़ लिया। कालांतर में इसी विचार को सबने अंगीकार किया और इस विचार को मानते हुए तमाम सभ्यबुद्धियां भी निष्क्रिय हो असभ्यता की राह पर चल पड़ी। जो पूर्णतः निष्क्रिय नहीं हुई उनमें कहीं कसक रह गई कि,'यह सभ्यता तो नहीं हो सकती।' इन बुद्धियों की इस कसक को मजबूत करने का काम किया ऐसी शक्तिशाली इच्छाशक्ति वाली स्त्रियों ने जिन्हें रोकने का सामर्थ्य उस गुलाबी पिंजरे में नहीं था। पर, अब देखना यह है कि उनके इस पिंक रंग नुमा पिंजरे को तोड़ने के विचार का प्रभाव कहां तक पहुंच पाया है।

आज जब हम नारीवादी आंदोलन की चौथी लहर को अनुभव कर रहे है, तब भी क्या हम यह गुलाबी पिंजरा स्त्रियों पर से हटाने को तैयार हैं? क्या हम इस पिंक को सबका रंग मानने को तैयार हैं? क्या हम हर रंग की स्त्री को और हर रंग में रंगीस्त्री को इस तथाकथित सभ्य समाज का अंग मानने को तैयार हैं? ये सवाल बड़े हैं और बार-बार पूछें जाने ज़रूरी हैं। लोगों से, पर खुद से भी।

# Is Pink only a Color?

Arushi

*Is pink only a color?*
*Is woman not a human?*
*Is my femininity a stain?*
*Is my confidence a sign that I am characterless*

These questions routinely come up in this jet age and people are still trying to figure out why. Gender roles plays a big role in the society that exists today. It tells me what the colour of my lipstick should be, the length of my dress when I am sitting in front of my elders.

When asked for answers, we are taught to correct our choices of colours and normalize the brutality of the norms imposed on us.

## PINK

Yes, this color is a symbol of femininity, tenderness, politeness and of being subtle. These are mere qualities that can be a part of man's nature as well. Being a woman doesn't mean that I am naturally tender or incapable of being aggressive. These gender roles and gender biased ideologies misguide and mislead us. Old adages have become toxic for today's era. And educated people following what should not be followed makes my heart bleed.

I am a young youth
What I am told to follow
I don't believe
And that's the truth.
I am the power,
My physicality isn't a barrier.
Colours that I wear
Are my choice.
I am bold pink
And tender black.
What I am born natural
Shouldn't be a stigma.
My nurture, nature, surrounding
and choices are not criminal offences.
But, Your questions on how
I am isn't a justice I bet!

If we want this world to be free from stereotypes, we will have to stop defining colours to the younger generation because when we were young we learned there are seven colours in the rainbow and that is VIBGYOR, so let's not forget the OBGIV of ROY-G-BIV!!

Photos: Google images

# Pink isn't a color, it's an attitude

Photos: Google images

Neha Sharma

Have you ever watched the movie Pink & thought why does it have that title? For those who haven't watched it, let me tell you. The storyline of the movie revolves around a girl, who was harassed and abused. It also depicts how she combats the situation and emerges even stronger than before. Well after proper observations and reading some facts; I realised that pink is not just a colour, it is women empowerment, which altogether now justifies the title of the movie.

Pink truly justifies and reveals the "Nari Shakti" in its actual sense. For a very long time, in the Indian culture women are considered the incarnations of Goddess Lakshmi, which means that they bring happiness & peace wherever they go. The colour pink is also a portrayal of tenderness, affection and purity.

Colours are symbols of movements like white is for peace & red is for danger. It's okay to use colours to express your thoughts, but we must understand it is the idea and the thought, which is the real gem apart from that everything around it is only shells. I believe giving a particular colour to a segment as their identity is unjust and biased.

In the end, in colour psychology, Pink is a sign of hope!

# जेंडर कलर पेयरिंग

दिव्या व्दिवेदी

अगर किसी बच्चे के लिए कपड़े खरीदने कि बात होती है तो हमको पता ही होता है कि अगर लड़का है, तो नीले रंग के कपड़े और लड़की है तो गुलाबी रंग के कपड़े लेने है। यह बिल्कुल आम प्रवृति है की हम में से ज्यादातर लोग लड़कों के लिए नीला और लड़कीयों के लिए गुलाबी या उससे मिलते जुलते रंग के कपड़ों को प्राथमिकता देंगे। लेकिन क्या हम जानते है कि इसकी वज़ह क्या है। किस आधार पर हमने अपने और बच्चों के लिए रंगों का बंटवारा कर लिया है।

इसका सबसे पहला तर्क यह है कि, ऐसा माना जाता है कि लड़कियां नाज़ुक होती है और गुलाबी रंग को भी नाजुक चीज़ों की पहचान के रूप में देखा जाता है। ये भी माना जाता है कि गुलाबी आंखें, गुलाबी गाल या गुलाबी मिजाज ये सारी चीजें हमेशा से जुड़ी हुई हैं। दूसरी तरफ बात आकर्षित होने की है। इसकी बड़ी वजह यह है कि इस रंग को गंभीरता और औपचारिकता से जोड़ा गया है। जब किशोर से युवा हुआ पुरूष काम करने के लिए बाहर निकलता है, तो उसे प्रोफेशनल दिखना होता है। इसके लिए उसके पास सिर्फ सफेद, नीला या उसके दूसरे शेड्स ही होते है। यह एक वज़ह है, जो पुरूष के बीच इस रंग को लोकप्रिय बनाती है। बीसवीं सदी की शुरुआत में रंगों का विभाजन बिल्कुल उल्टा था, होंगकोंग से छपने वाली महिलाओं की पत्रिका 'होम जर्नल' के उस समय के कई आर्टिकल इस बात की पुष्टि भी करते है। एक आर्टिकल के अनुसार उस समय गुलाबी रंग लड़कों और नीला लड़कियों के लिए उपयुक्त समझा जाता था, क्योंकि गुलाबी रंग कहीं ज्यादा स्थायित्व और मजबूती का प्रदर्शन करने वाला रंग है, इसलिए यह पुरूषों के लिए सही है। वहीं नीला रंग ज्यादा नाजुक और सजीला है, इसलिए ये महिलाओं के नाजुक और कोमल होने से जोड़ा जा सकता है।

फोटो: गूगल

उस दौर में छपे कई लेखों से यह भी पता चलता है कि नीले रंग के चटक होने के कारण महिलाएं इसे ज्यादा पसंद करती थीं। वहीं गुलाबी रंग को पसंद करने वाले पुरूषों का तर्क था कि यह रंग आरामदायक है और आंखों में चुभता नहीं है।

लोगों का मानना है कि 'जेंडर कलर पेयरिंग' की अवधारणा फ्रेंच फैशन की देन है। 'जेंडर कलर पेयरिंग' यह शब्दावली लिंग और रंग के समन्वय के लिए इजाद की गई है। जैसे, गुलाबी यानी महिलाएं और नीला यानी पुरुष। गौरतलब है कि 1940 में पेरिस को फैशन दुनिया की राजधानी कहा जाता था। 1940 के दशक में महिलाओं के लिए गुलाबी और पुरुष के लिए नीले रंग के करीबी रंगों के कपड़ों को प्राथमिकता दी जाने लगी थी। कहते है कि फिर यह पहल फ्रांस से निकलकर पूरी दुनिया में प्रचलित हो गया। बाद में यह बात 2007 में हुए एक वैज्ञानिक प्रयोग से भी सिद्ध होती दिखी। तब इंगलैंड की न्यू केसल यूनिवर्सिटी के न न्यूरोसाइंटिस्ट डॉ. आन्या हर्लबर्ट और याज्हु लींग ने 20 से 26 साल आयुवर्ग के 206 युवाओं पर एक प्रयोग किया। इस प्रयोग में उन्होंने स्पेक्ट्रम को दो हिस्सों में बांटा पहले वर्ग में लाल, नारंगी, पीले और हरे रंग को रखे गए। दूसरे वर्ग में बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा और पीला रंग रखा गया। स्पेक्ट्रम के इस बंटवारे की पीछे कोई वैज्ञानिक वज़ह न होकर, यही सामाजिक मान्यता थी। जो गुलाबी या चटक रंगों को पुरूषों के मुकाबले स्त्रियों से जोड़ती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, महिलाओं में रंगों को पहचानने कि क्षमता अधिक होती है, इसलिए वे गहरे और स्थिर रंगों के अलावा चटक-चमकीले रंगों को भी अलग-अलग कर देख सकती है, उन्हें पसंद भी करती है।

हालांकि बीते सालों में बच्चों और उनके रंगों के चयन को संबंध स्थापित करने के लिए कई प्रयोग हुए है। जिनमे ज्यादातर एक से ही रिजल्ट सामने आए है। इन परिणामों के आधार पर, यह कहना गलत नहीं होगा कि कोई बच्चा भले ही वो लड़का हो या लड़की, गुलाबी या नीले रंग के बजाय तीन प्रमुख रंगों- लाल, हरा, पीले व अन्य की तरफ ही आकर्षित होता है। इसलिए यहां पर 'जेंडर कलर पेयरिंग' की अवधारणा गलत साबित होता है। अब अगर आप लड़कें हैं और आपको पिंक कलर की शर्ट पसंद आ रही है, तो बेशक आप उसे पहन सकते हैं, क्योंकि जेंडर के आधार पर रंगों का बंटवारा करने का कोई औचित्य नहीं है।

फोटो: गूगल

# Don’t forget VIBGYOR

Kavya

Photos: Google images

In younger age, we learned the colours of the rainbow through 'VIBGYOR'. We learned about the numerous colours in our universe and the relation between them. But as we grew we learnt another colour rule that "pink is for girls and blue is for boys". Well who got to decide this and what will be the impact of this on our society?

Although parents are getting more creative with the gender revelation of their new-born babies, but the practice of using pink and blue colours for the same is quite prevalent. Assigning such colours to babies enforces a role that they are supposed to grow and fit in. Like if you are a girl that means you have to like pink and you cannot like blue, and if you do then they name you a tomboy and an attention seeker.

As soon as a baby is born, parents usually start dressing them in pink and blue colours according to their gender. But there are plenty of parents who refuse to standby this ridiculous code and let their kids choose a colour for themselves.

Instead of giving girls pink dresses or pink toys which are associated with delicacy and femininity, we must let them choose what they want. A girl may also like playing cricket, similarly, boys can also choose to wear a pink t-shirt or play with a doll. Doing this will create a feeling of 'gender sensitization' among both the genders.

These gendered colours are warnout and outdated. We need to stop determining a person's preference and choices based on the colour they like. Let's not neglect the 'VIBGYOR' of colours.

**"Pink can be for boys and blue can be for girls too."**

# Gender of Toys

Photos: Google images

Kuntal yadav

Irene sighed as the chatter continued around her, feeling exhausted after the long day of doing assignments, attending classes and socializing but most of all, from the recurring theme of conversation her family was having yet again.

"No Geeta! We should definitely buy something in blue or some sort of game since it's Ishaan's birthday." Irene's mother insisted. Irene for the life of her did not understand the relation of the colour or type of toy and the person being Ishaan.

"Ma, Ishaan doesn't even like any games and much prefers pink," Irene replied. Her mother shook her head, cleaning up and chattering about in the kitchen. Her aunt Geeta chuckled as she pat Irene's head, shaking her own in the lieu of an answer to Irene's inquiry cum statement.

"We have all seen what the boy likes and those are not things a young boy should waste his time with anyhow, my child." With this, Irene's mother concluded their discussion.

Later when Ishaan's birthday celebration had started, he pulled Irene to the side, whispering, more so whining, "'Rene, why'd you give me cars? Of what use are they to me?" Irene had no answer. The words were on the tip of her tongue, something that had been cemented into her since she was a child. But they didn't feel right anymore. Why should toys be limited to the recipient of it?

Ishaan shrunk seeing her hesitance in answering. Slouching, he whispered, "Oh well, I suppose you're doing me a favour, everyone teases me about my choice of toys anyway. I guess I won't be called 'girly' anymore." Ishaan looked morose. Irene felt a pang of fury at the unfairness of the entire situation.

"I don't understand what's so wrong in being 'girly.' 'Shaan, don't worry, we'll go buy a new, less expensive doll for you with my pocket money later," Irene tried to reassure him and his whole demeanour seemed to light up like a Christmas tree. Giggling happily, he squeezed Irene's hand and left to thank others for their gifts and the party went on its merry way.

When Irene reached home, she still couldn't grasp or even rationalise the situation even if she was thirteen and everyone around seemed to agree with limiting and confining colours to gender. The TV advertisements showed most things made for girls to be in the colours of red and pink and encouraged them to play with kitchen-sets and barbie dolls. Meanwhile, for boys, it was cars and sports with the colour preference being blue or black. Irene did not understand why Ishaan would get bullied for liking a simple colour or preferring to play with dolls. Since when was being or 'acting like a girl' taken in the negative context?

She believed that it should be okay to like whatever a person wanted to like without anyone having any right to decide what should be liked and what shouldn't. It simply felt irrational to her that just because Ishaan was a boy, he was "supposed" to like only certain things and that Irene being a girl limited her to certain preferences as well. But what left her absolutely baffled was that everyone around her seemed to be perfectly fine with this injustice.

A person should just be treated as a person rather than as a "girl" or a "boy" and further should not be blamed for liking what they did. But she had heard so many comments such as, "Girls are not supposed to sit like that," "Why are you crying? You're a boy, man up!", Wow! She hangs out with boys, what a tomboy!", "Why are you screaming? Are you a boy?" by her own family, friends as well as teachers. Irene pondered on who exactly decided how a girl should behave like and why were so many general things such as crying, shouting, way of sitting, etc. related to a particular gender? It seemed awfully unfair and constricting to her, and it also bothered her that most of her friends also agreed and followed these "norms" outcasting anyone who did not fit into these boxes that the society had created. She had seen Ishaan being scolded lightly, teased and even bullied for doing something as innocent as having a pink coloured box. She wondered if anyone shared the same opinion as her.She was determined to question her parents and ask their reasoning for thinking this way and why exactly should colours have a gender?

After all, shouldn't everyone be allowed to like what they like and play with what they want, talk what they want to talk about? Was she not learning this in her Social Studies class- Freedom of speech? Why should colours be assigned to gender and toys too. Shouldn't toys be toys and pink just a colour?

Photos: Google images

# कपड़ों के रंग का अर्थशास्त्र

नंदिनी लवानियां

मैंने काल्पनिक दृश्य में सूरज को रोते देखा है, और हकीकत के साये में रंग को बँटते देखा है। तमाम रहस्यों को मैंने खुलते हुए देखा है, और कुछ रंगों की ख्वाहिशों को दबाते कल्पना में बात करु या कल्पना से परे मैंने रंग में भी छुपे लिंग को परखा है।

तो, राम-राम सा। हमार नाम लाजवंती सुमरिया है! वैसे प्यार ते हमें लज्जो कहकर ही बुलाते हैं या तो प्यार का नाम समझ लीजिए या तो हमार नाम की सई फॉरम| अब हम अपनी जिंदगी के बारे में का ही बताएं, एक छोटा-सा परिवार है हमारा। हम हैं, हमारा एक लड़का और हमारे पतिबाबू। लड़का हमारा दसवीं में पढ़ता है और हम दोनों मजदूरी करते हैं। अब क्या करें आज के समय में बालक का पालन पोषण और उसकी पढ़ाई-लिखाई और हमारी जरूरत का ख्याल कौन सी सरकार रखती है, बस वो चुनाव करवा देती है और जीत जाए तो हमें पूर्वज समझकर ही भूल जाती है। इसलिए खुद की हिफाजत और देख-भाल तो खुद ही करना पड़ता है।

फोटो: गूगल

हम 42 वर्ष के हो गए लेकिन आज तक एक बात अभी भी हमारे हैं मगज में घुस नहीं पाई। आज से 2 वर्ष पहले 27 अगस्त को हमारे नीरू यानी हमारे बेटे का जन्मदिन था | नीरू ने फरमाइश करी की अम्मा हमें तो नई शरट (शर्ट) चाहिए। हमने कही चल ठीक है लल्ला तुम्हारा जन्मदिन है, तो हम मना कैसे कर सकते है। तो जन्मदिन से एक दिन पहले हम अपने गांव फंचली से कोई 25 किलोमीटर दूर एक बाजार लगता था, वह हम और हमार नीरू ताँगे से गए। ढाई घंटा टाँगे में बैठे कमर और पैर झटकाए पड़े, ऐसा लग रहा था कि सरकार में छह महीने से टमाटर के दाम बढ़ाए हों। पर अब हमारे नीरू की खुशी के आगे जे कष्ट कुछ भी न लगा हमें आखिरकार सरकते - रपटते हम बाजार पहुंच ही गए।

बाजार काफी बड़ा था काफी पढ़े-लिखे लोग आए हुए थे। वही जो 'हेलो हाव आर यू' फलान-डिकान बोलते रहते हैं, अब हम तो ठैहरे अंगूठा टेक। हमने तो दुकान वाले भैया से सीधा, अब तुम्हारी भाषा में बोले तो 'डाइरेक्ट' राम-राम करी। बोला कि भैया हमारे लड़के के लिए अच्छी सी कमीज दिखाओ। दुकानदार ने कई तरह की कमीज दिखाई कुछ नीले रंग, कुछ काले रंग आदि। लेकिन हमें उनमे से काई जची नहीं। हमने नीरू से पूछा बता बेटा तुझे कौन सी पसंद आ रही है। उसने बोला की अम्मा नीला, काला, सफेद ऐसे रंग की शर्ट तो हमारे पास है लेकिन हमारे पास कोई चमकीला भड़कीला रंग नहीं है तो पिंक कलर की शर्ट चाहिए। जैसे ही उसने पिंक कलर बोला वैसे ही दुकानदार के मुंह से हंसी के बादल फटने लगे, मानो कोई हास्य बाल कवि सम्मेलन चल रहा हो। हमें लगा कोई इनकी आपस-दारी की बात होगी, लेकिन वह तो हमें ही देख कर हंस रहे थे हमने बोली भैया पिंक कलर की शर्ट निकाल दीजिए। तो दुकानदार हंसते हुए बोला कि आपका बेटा क्या कोई लड़की दिमागी व्यक्ति है जो काले नीले मर्द वाले रंग को छोड़कर पिंक पर ही अटका पड़ा है। हमने दुकानदार से बोली, भैया आपके पास पिंक कलर में शर्ट हो तो दिखा दीजिए। दुकानदार बोला नहीं है कोई और का कलर ले लीजिए, इस पिंक में ही क्या रखा है, वैसे भी पिंक गर्ल्स कलर होता है। हमने दुकानदार से पूछा कि किस महानुभाव ने गुलाबी रंग पर लड़कियों की मुहर लगाई है। दुकानदार थोड़ी देर शांत रहकर बोला आपको अभी कपड़ों के रंगों के अर्थशास्त्र की जानकारी नहीं है। कुछ चीजें लड़को और लड़कियों के लिए अलग बनाई गई है। हर जगह समानता के नारे नहीं चलते। उस दुकान से खाली और भारी दिमाग़ लेकर थोड़ी देर सड़क पर हम शांत खड़े रहे, तमाम सवाल जहन मे चलते रहे। मैं काले-गोरे के भेद से नीरा को दूर रखती रही। अब रंग के साये को परे कैसे करू। मैने स्त्री के लिए गाली व अपशब्द की ओटक में नीरा को बड़े होते हुए देखा है, अब उसे इसका हिस्सा बनने से रोकू कैसे? पिंक सिर्फ एक रंग नहीं एक लिंग की पहचान है? ये उसे समझाऊ कैसे? ये रंग पर लगी लिंग की मोहर हटाउ कैसे? इन लिंगों को समाज के आडम्बरों से बचाऊ कैसे? मुझे ब्लू नहीं पिंक चाहिए। मेरी पसंद लिंग से भिन्न हों ये अधिकार चाहिए!!

फोटो: गूगल

# Maru's Black Closet

Aditi Aggarwal

The day was pleasantly cool, making it perfect for a clean-upday at home. Sally started to clean while making her child sit with his toys. The boy soon grew bored of the little things and walked towards his mother's clothes with mischief in mind. He saw a pink veil and tried to wear it on his head clumsily. His eyes sparkled as he looked at his reflection in the mirror before turning red from happiness.

Maru was walking down the street with his head hanging down. The people around him were giving him wary looks as they looked at his towering height and scary appearance. With a black hoodie and blue jeans, Maru was walking without a destination in mind. He was supposed to go home and work on his assignment, but today's event at school drained him of any will.

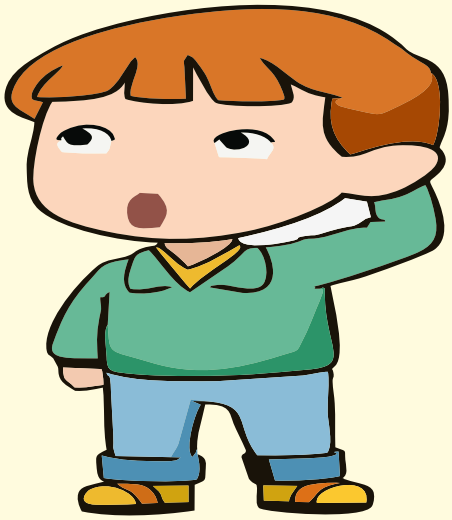

He sighed and looked at the crowd of people. Couples hanging out with each other, small families taking a walk, mothers carrying their children, bunch of high school kids chatting happily and laughing. His eyes lingered on the high school girls a little longer before he hurriedly looked away. But his gaze landedon those girls again and his eyes sparkled as he looked at their cute hair-ties and keychains. A cute pink teddy caught his eye in the mist, almost making him talk to the girls so that he could touch the adorable key-chains. Maru came out of his daze as something small bumped into him and he looked down to see a startled kid on his butt. He leaned down to help the kid up but before his hand touched the girl, she was whisked away by her mother.

"Are you trying to harm my child?" The woman said in a loud voice, attracting the attention of many passers-by who stared at Maru with a suspicious gaze. Maru frowned in panic, resulting in the woman stepping back in slight fear. Maru froze with his hand suspended in the air as he felt everyone's gaze on him and not one of them were friendly. He started sweating profusely as people started to murmur around him.

"I- I was just...," he wanted to say in a small voice but everyone's faces around him said war and before he could clear up the situation, Maru ran away as fast as he could, ignoring the shouts of others behind him. He stopped after a while and found himself in an unknown alley. Maru's reflection entered his eyes when his gaze fell on the glass window. He looked at the person with the small round eyes, pointed nose, thin lips with a cut on the lower one and the big frame of body that the face belonged to. He turned away from his reflection with a slight frown when suddenly his eyes fell on the shop across the street, or more specifically the big pink teddy bear with soft fur and beautiful glass eyes.

Before Maru could stop himself, he was across the street and in front of the shop staring at the plushie with sparkling eyes. His will to buy the plushie was increasing the longer he stared at it and in an impulse, he bought the teddy but immediately regretted his decision.

He started hearing the jars and taunts of his middle school classmates as they laughed and mocked him for liking pink, sparkly and cute things. Before the mocking, Maru had never seen anything wrong with his way of walking, talking and his choice of clothes. He loved to talk about cute toys, cute tops and his wardrobe was filled with his favourite colour, pink. But after the first kid pointed out his choices as gross, everyone in the classroom started agreeing with that and called him "weird."

Photos: Google images

# गुलाबी रंग एक निशान

वंदिता चांग्रानी

एकता से नहीं रहते, क्या तुम्हें आभास है?
क्या गुलाबी केवल रंग है, या आखिर यह एक अहसास है?
एहसास तो है काफी खास और कुछ हद तक सुनहरा
पर अपने भीतर बसाए रखता है सत्य, जो है समुंद्र जैसा गहरा।।
सत्य है उस समाज का, जिसने यूं तो हमें जन्म दिया।
पर जब बात आई आज़ादी की तो इसने हमें कैद भी किया।
कैद करने का कारण, पूछने पर भी कभी ना बताया,
लेकिन रीति-रिवाज और सामाजिक तरीकों में खूब उलझाया।
ऐसी उलझनें जो कभी चारित्रिक प्रश्नों से सुलझाई, तो कभी किया रंग-भेद
पर अपनी बात सामने रख ना सके, बस इसी बात का रह गया खेद।
किन्तु न समझें इस खामोशी को कमजोरी या गुलाबी को केवल रंग,
यह तो है बदलती पीढ़ी की निशानी, एक नई चाल का ढंग।
न रहेंगा मूक और ना ही झुकेगा यह गुलाबी रंग
अब गया वह शर्माने या सहने का ज़माना।
लो अब आया है नया दौर।
इस दौर में गुलाबी रंग का बड़ गया है महत्व।
बन गया है वह निशान, जो संकेत है विश्वास का।
नहीं रहने देगा किसी भी महिला को परेशान।
तो आओ चले एक साथ, बदले इस युग का रूप,
आखिर यही गुलाबी रंग तो है पहचान व सभी देवियों का सत्य स्वरूप।

# She hated Pink

Ashish Tripathi

Photos: Google images

A family from Delhi is very happy because a child is going to be born soon. The father wants a girl and the mother wants a boy child. The family of two is ready to share their love with their first little one. They discuss names for the child and decorations for the arrival party. Finally, the day came and a cute girl child was born.Both the parents were very happy. They started buying clothes and decorating the house but everything seemed to be doused in pink.The new-born was named “Mamta” and this is the story of her life lessons.

Mamta, now a five-year-old girl started figuring out the world, wow! Now she can speak. So, she asked questions about herself and other small things. She felt that there was something which was dominating her life. She was too young to understand this but somehow, she felt that it was the pink colour. The walls were pink, her clothes were pink, her birthday gifts were pink. She had other colours as well but mainly, it was pink. She started hating that colour.

As a teenager, she thought that the genders are differentiated on the basis of colour and boys can wear dark, strong dominating colours while women belong to the soft part of the society. So, during her school days, she thought of staying away from the society i.e boys and men. She grew up with this thought and started filling her spaces in the patriarchy. Her parents told her to think about her career and proposed her to pursue MBBS. She thought it to be a noble profession and was wilful about a girl being a doctor. She started her preparations for AIIMS during her 12$^{th}$ grade. She was good in studies and cleared the exams. Now she was in college but the thoughts of patriarchy were still fixed in her mind. She was doing well and was a focused student.But whenever she had to wear pink coats (doctor/nurses coats), she felt bad and thought about how hard it was to grow up. Even so, she managed and started making new friends because she felt that everyone was going through something similar there.

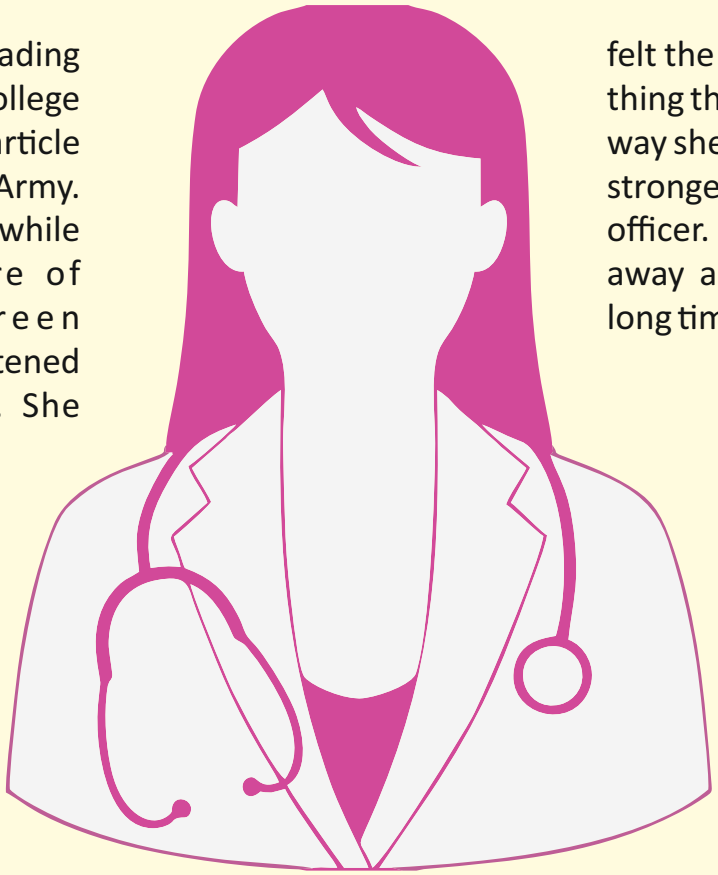

One day, Mamta was reading the newspaper in her college hostel and she saw an article on women in the Indian Army. She read the article and while watching the picture of women in olive green uniform, she felt enlightened and very empowered. She made up her mind to go in army as a doctor and olive green became her favourite colour.

After completing her graduation, she applied for Army officer entry as a doctor. Because there she could get her dream colour, the dominating one. She appeared for her interview and got recommended. The hard part was convincing her parents to let her choose this career path and expressed her love for the colour of the uniform. But it wasn't enough for the parents to send their daughter in the line which is tough because she would have to live away from home when she could just stay there and work in a regular hospital. So, they stopped her. But her love for the uniform was too much and after a lot of emotional moments, Mamta was able to convince her parents. Now, she will live with dominating/strong colours and fulfil her dream.

The days were passing by and she completed her training and got her uniform. Now she felt stronger but internally, she felt the same. She got commissioned and started her work. She felt the same as before, but the one thing that had changed now was the way she handled things. It made her stronger as a doctor and an Army officer. Now, the pink colour was far away and she hadn't worn it in a long time.

After some years of work, she was offered the role of Head of Doctors for Awareness of Breast Cancer, i.e the UN program in Indian and African regions. As a doctor, it was a great opportunity and as an Army person, it was the 5-star vision. She joined the program and although she already knew about breast cancer, she had forgotten that its awareness sign was in pink. The colour she hated and always avoided had come to enter her life again. She visited places, worked hard but it was time when she had to wear that pink band on her olive-green uniform. But she was a disciplined army officer and she chose to accept the band. During her awareness sessions, she even distributed the pink bands to all. Now she understood the value of pink colour, which has the power to change the world, power to educate the world. Finally, she accepted everything, every colour and felt that there is nothing in particular that is strong or dominating in this world. It's just the thoughts of people, patriarchy, colour discrimination, etc. that inculcate controlling thoughts and all of this can be removed with the right lessons of life.

Photos: Google images

# पिंक, सिर्फ एक रंग नहीं

हिमांशु

पूछ रहे आधुनिक युग में,
क्या पिंक सिर्फ एक रंग है?
नहीं नहीं नहीं
पिंक सिर्फ एक रंग नहीं,
क्योंकि भेदभाव को ले चला ये संग है।
जब लड़की इस रंग के वस्त्र पहने तो
ब्यूटीफुल, ऑसम, गॉर्जियस बोले,
जब लड़का इस रंग के वस्त्र पहने तो,
समाज बोले छोरी है, क्या बे?
नहीं रहा पिंक सिर्फ एक रंग,
क्योंकि समाज ने भर दिया है
इसमे भेदभाव के रंग।
अगर पिंक सिर्फ एक रंग होता तो
इसमें इतना भेदभाव ना होता।
हल्का गुलाबी हो, चाहे हो गाढ़ा गुलाबी
लेकिन लड़कियों के लिए ही बना है गुलाबी।
लड़की है तो लें ले गुलाबी रंग
लड़का है तो गुलाबी रंग से दूर हो ले,
भईया अपने लिए कोई नीला या काला रंग लें ले।
जन्म लेते ही दो हिस्सों में बांट देता है गुलाबी
लड़की हुई तो गुलाबी रंग के तोलिये
और यदि लड़का हुआ तो नीले रंग के तोलिये
में लपेट देता है गुलाबी।
लिंग भेदभाव फैलाता है गुलाबी
लड़के और लड़की की पहचान कराने लगा है गुलाबी।
लोगों के अंतर्मन मे इस प्रकार समा गया है गुलाबी,
जैसे सिर्फ लड़कियों के लिए ही बना हो गुलाबी ।
क्या अब भी मानते हो सिर्फ एक रंग है गुलाबी
नहीं भईया नहीं, नहीं रहा सिर्फ एक रंग गुलाबी
क्योंकि भेदभाव का चिन्ह बन गया है गुलाबी।

# Speaking Out Loud!

Photos: Google images

Ruparna Chakarvarty

You told me that I was supposed to be my father's property, married off in return for land, crops and social security and become my husband's property. Then give birth to a son and become his property after I'm widowed. Therefore I shouldn't have a bank account or a job.

But then you ridiculed me for being dependent on men. Called me a gold digger while made dowry - "a tradition".

So I asked for a job, to become self-dependent. You had an issue with that too. "Larkihaath se nikalgayi" you told my father. (Translation- Your girl is out of your control). Why do you want to control your girls anyway? You, didn't have a comeback to that? So you declared that I'm shameless, I disrespected my elders by talking back and well, they told me I shouldn't be speaking so much.

You told me how to dress up appropriately, so I don't get raped. A 5-year-old still got raped. You mourned through a candle march. A 20-year-old got raped, you asked what was she wearing? Was she drunk? She should've been careful- the boy was drunk he didn't know what he was doing. Maybe she should tie a rakhi on his wrist, or he should marry her. Everything will be okay after that.

God forbid if she was wearing something you think is inappropriate, you concluded that she deserved to get raped. A woman in a burkha still got raped. A man got raped and you laughed it off because he should've enjoyed it. How will I ever make you understand rape was never about clothes. It was always about the rapist.

And No, always means No. But I was scared because apparently, it would be my fault if I get raped Hence I should be careful and dress "appropriately" - So I wore a kurti and salwaar. You called me "behenji", a prude, boring, not a fun type girl. How will a man sexualize me enough to want to marry me if I dress this way? You told me people dressing up like me is the "before" of a transformation video.

You sexualized everything about me since I was a little kid. I changed my shorts and wore leggings because people were coming over. School cared more about my skirt, my nails and my high ponytail, and less about what I learnt and how I felt. Even though you sexualized everything about me- my intelligence, dumbness, depression, laugh, weakness, strength, secondary puberty characteristics- my breasts but only while it satisfied a man. When I used it for its real purpose, i.e. to feed my infant, you told me to do it privately. When I gained confidence, you demonised my pictures, demonized me. Used my occupation as a curse word and looked down upon me. You sexualized me. But when I made money out of it- you didn't like it.

When I wore makeup, you called it "fake advertising" - we advertise products, not people. But how will I ever make you understand?

I was trying too hard with my golden eyelids and a red lip, trying to do what? Oh yeah, lure men to marry me yeah right sorry I forgot my bad.

So I removed it. Then you called me ugly. My bare face isn't good enough. You ridiculed my natural body with cellulite and tummy rolls. Magazines told me that a woman with a body like me shouldn't wear a bikini, it'll look like a whale. Everyone would laugh. So should I slimdown to "get back at everyone" and get a "revenge"?

So I went to the gym and got that flat stomach with abs and muscles. You didn't like it either. "women with muscles aren't attractive," you told me. Men wouldn't want a woman with toned muscles.

So I've concluded with the very few examples that you don't care about modesty, nudity, dependency, independence etc. You only care about one thing- controlling me!

Once you lose your control it messes with your head, nothing is good enough for you because well I'm not doing it according to you, according to the "norms". I've accepted the fact that I can't make you understand, so I've decided not to. I've also decided to control my own decisions and my choices regarding my life.

It upsets you. But this makes me feel great. You know what? I'm glad I have a 'kaichijaisizabaan'. I think I'm always going to be that way. Wasn't born with zipping on my mouth, won't zip it up now either. It's too late to control me now.

I hope that you'll understand one day, that *putravatibhava* wasn't a blessing, that women were never weak, women were never supposed to stay quiet and be the one to sacrifice at all times. Men aren't supposed to be the only earning members of the family and, crying isn't a sign of weakness, it's a human trait.

# नारी

नीरज

कपाटों के पीछे
कितनी खामोशी होती है,
मानो जैसे एक
दर्द की आहट गूंजती है।
कितनी दीवारें भीगी हैँ
आंसुओं के जल से,
दीवारें फिर भी खुलती हैँ
मधुर भरे स्वर से।
कितनी खून की होली
उसके साथ होती है,
पर फिर भी वह
सुहाग के लिए व्रत करती है।
न झुक सामने उसके,
जो नोचते तेरे जिस्म को
न तू सहन कर, न बर्दाश्त कर
अकड़न भरी काया है प्यारी जिसकों।
तू नारी है, तूने प्रेम बरसाया,
देकर एक सुगंध, सारा जग महकाया।

# In the Dreams

Kshitiz Kumar Singh

***"You may say I'm a dreamer***
***But I'm not the only one***
***I hope someday you join us***
***And the world will live as one."***
***-Imagine, John Lennon (1971)***

In the shadows, she lurked, letting the air kiss only her face. How long it had been since she'd felt anything but a cool embrace of the forsaken lake? It was not the lover she'd yearned for, yet the one element to her equal existence on par with men was missing.

There is no trace of colour inside her room, as for the preconceived notions have had their toll on her kind yet, atrocious being and consciousness. A preacher in the truest sense; she cares for her walls with faces on it, bookmarks with a band of pink, a pyre with flames and all the shades one could possibly fathom. Pink was just a colour after all, and she knew it, but only if the creative heads around her were aware and alive enough.

As for Emily, it was time to sleep and to hyperventilate above the common folk sense and dream. Another ladder of expression was about to be added to the curious head of thought and to what Lennon imagined in 1971, a world of his liking with all shades and no segregation.

As Emily runs wild with her dream, silken hair and the colour of freshly bloomed cherry blossoms which danced as if they were underwater. Up, up they reached, unsatisfied with their position on the Dragon-spirit's back, climbing towards an abyss like the ocean dark.

It wasn't until night fell that you could see the pollution of pink either hazing the city line as it was always there hugging every building, every man, woman, child and bot. There wasn't a living being on this dream planet CX-R35 that pink Ether didn't touch, and it felt to them all just as they felt it. It was so different from the real world where roles and duties are assigned to match the colour band criterion of a particular gender. For these knuckleheads, pink is not just a colour, it is the code of separation which seems fruitful for Emily as she forged her room and her dream.

The Ether knew every want, every need, all desires of the mind and heard even the ones unspoken, and carefully measured which to fulfil to keep the populace happy and equal without any gender bias. If a family was hungry, and three of the four wanted an ancient American meal, the ether knew this and commanded their nutritional apparatus to produce the desired food. The real world wasn't so generous.

If a child was abandoned, it too knew this. It provided a path of pink mist to the nearest shelter, sometimes offering a piece of candy or even imitating the silhouette of an adult as a coaxing mechanism. The real world, however, raped the poor child.

It knew you were sick before you even felt a sneeze first coming on or saw a pox mark, the poor girl lies and succumbs to her death because her pink is discriminatory and different.

There was a sound in the distance a panicked shouting she knew all too well, and she closed her eyes wishing for it to go away. The shouting grew nearer, the water alive with vibrations as something approached but she had no voice to cry out or beg to commit and perform the fire rituals of her father as her pink bled with red every month.

The dream continues and she didn't jump out of her bed to look for her father. There was fury, and she could feel it, and the troubled differentiation countered her in sleep. How fitting to disguise the cure of allurement with beauty and glow; not a single soul could see through it the way Emily saw it.

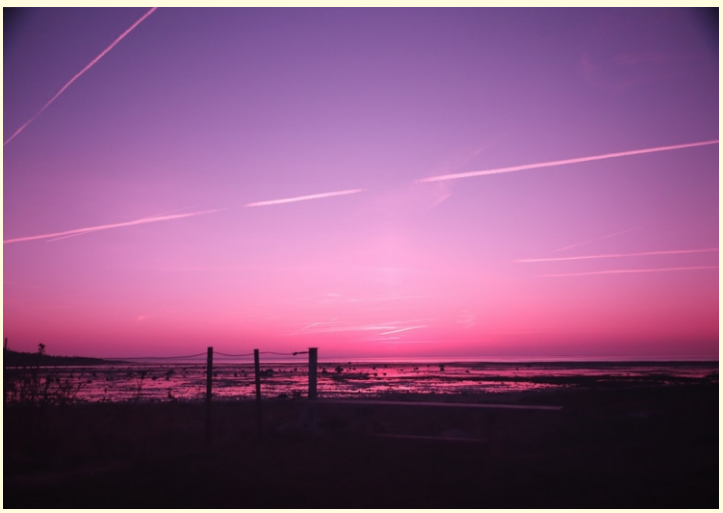

Photos: Google images

And so her curse continued, forever trapped in a prison of pink, clearer than the finest crystal, longing to feel something besides its coolness on her skin, longing for the warmth of love or comfort but able to watch as those feminists who tried to change the real world were doomed to a similar fate.

There's a bigger world out there, always, and it's within us to chase it. Like the intrigue of a place can have its gravitational pull, we are pulled into the orbit of curiosity, desperate, destined to search.

The last rites her father were done by a human with the 'blue' shade, as if in pink was something alien. The dream rages on, and as it seems to crumble, a man stood at the edge of a colour burst horseshoe, every crag of the city gets alight with the neon glow of pinkish mystery.Through it, in the distance, the soft tendrils of distant Nebula licked at stars pockmarking the cobalt sky, and the next nearest development could be seen as a speck blotting the only mountain range that hadn't been tilled on the dream planet CX-R35.

With a deep sigh, a gale born of the storming apathy within her. Emily finally opens her eyes to see her father in the dream. She always yearned for buzzing and crying just for sensitization of her pink self. Whether this was the real world or did her father enter the dream planet, will always fascinate her. What should indeed be instilled inside all of us is the seed of ultimate gratification and a dream of pink for the real world. Every band, every shade and not just pink is a colour and nothing else.

# भाषा का लैंगिक पूर्वाग्रह

सुधीर जागीड़

भाषा में लिंग का आशय वाक्य में कर्ता के स्त्री/पुरुष/निर्जीव होने से है। किसी भाषा में लिंग विशेष का अत्यधिक प्रभावशाली होना कई समस्याएं पैदा करता है। उनमें से एक है लैंगिक पूर्वाग्रह। भाषा में लैंगिक पूर्वाग्रह का तात्पर्य है, किसी भाषा में लिंग विशेष के प्रति एक सकारात्मक या नकारात्मक धारणा होना।

यदि किसी सामान्य व्यक्ति से पूछा जाए कि क्या स्त्री व पुरुष की भाषा अलग होती है। वह असमंजस की स्थिति में आ जाएगा। लेकिन भाषा व्यवहार के अंतर्गत हम देखते हैं कि भाषा में यह भेद संसार की सभी भाषाओं में किसी न किसी रूप में अवश्य ही पाया जाता है। इसमें पुरुषों का वर्चस्व आसानी से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए- भारतीय समाज में पति अपनी पत्नी को तू करके बोल सकता है जबकि पत्नी के लिए यह पाप माना जाता है। शब्दावली के स्तर पर भी पुरुषों और स्त्रियों की भाषा में भेद पाया जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की भाषा में रसोई संबंधित, घरेलू कामकाज से संबंधित, बच्चों के लालन-पालन से संबंधित शब्दावली अधिक मिलती है। वहीं पुरुषों की भाषा में इन कामों से संबंधित शब्द कम ही मिलेंगे। उनकी बातचीत के विषय समाचार, खेल, राजनीति आदि होते हैं। इसलिए, भारतीय समाज में पूर्वाग्रह है कि महिलाएं घर का कार्य अच्छे से कर सकती हैं और पुरुष घर का खर्चा चलाने में अपेक्षाकृत अधिक योग्य हैं। उपरोक्त उदाहरण किसी लिंग विशेष के प्रति पुरुषवादी सोच को प्रदर्शित करता है।

हिंदी भाषा में महिलाओं के लिए नाजुक, कोमल, कमजोर आदि शब्दों को प्रयोग किया जाता रहा है, जबकि पुरुषों को बलवान व शक्तिशाली बताया जाता है। यह धारणा व्यक्ति के मस्तिष्क में भाषा के माध्यम से पहुंचती है। एक पूर्वाग्रह का निर्माण होता है कि महिलाएं, पुरुषों की अपेक्षाकृत कम योग्य होती है। यह पूर्वाग्रह भाषा-से-व्यक्ति और व्यक्ति-से-व्यक्ति के जरिए संपूर्ण समाज में फैलकर अपना स्थान बना लेता है।

भारतीय समाज के पितृसत्तात्मक होने के कारण हिंदी समाज में लिंग के आधार पर हमें दुहरे सामाजिक मूल्य दिखाई देते हैं। पुरुषवाचक नाते-रिश्ते के शब्दों की तुलना में स्त्रीवाचक रिश्ते-नाते के शब्द गाली के रूप में ज्यादा पाए जाते हैं जो सीधे यौन संबंध बनाने से जुड़ी होती हैं। इस तरह की धारणा पुरुषवादी सोच का परिणाम है।

अक्सर महिलाएं इसलिए आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में अपना स्थान नहीं बना पाती क्योंकि वे महिलाएँ हैं। यह सोच भाषा से उत्पन्न होती है और भाषा के माध्यम से ही समाज में फैलती है। कुछ शब्द जैसे कारोबारी, मैनेजर, व्यापारी, उद्योगपति, प्रधानमंत्री आदि पितृसत्तात्मक समाज के द्योतक है। दरअसल, भारतीय समाज में माना जाता है कि एक महिला की अपेक्षा पुरुष किसी देश या क्षेत्र विशेष का नेतृत्व अपनी उच्चतम क्षमता के साथ कर सकता है। जब लोगों को राजनीति में स्त्री व पुरुष में से किसी एक नेता का चुनाव करना हो तो संभावना व्यक्त की जाती है कि किसी पुरुष नेता का ही चुनाव किया जाए, क्योंकि चुनाव के दौरान जनता द्वारा महिलाओं के प्रति अपने निजी पूर्वाग्रहों का उपयोग किया जाता है। महिलाएँ सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं, लेकिन भाषा को लेकर उनकी स्थिति में नगण्य बदलाव आया है।

# Gender-language bais

Photos: Google image

Madhav Kumar

A cricket player from Maharashtra, at the age of nine, was selected in the under-15 team and at the age of eleven was selected in Maharashtra under-19 team. Got inspired when the player's brother achieved, big. Today, the player is known as one of the best cricketers in our country.

Based on the above statements, which player comes to your mind first? I bet most people would have thought of Hardik Pandya, Rohit Sharma, Sachin Tendulkar or AjinkyaRahane. But if I tell you that the player is a woman, it may surprise you. The player is Smriti Mandhana, one of India's leading cricket player. It's not your fault that you guessed it would be a man. From childhood, we hear that cricket is a gentleman's game, so it becomes natural for us to think that the player with such an exceptional record can only be a man. I can give you many similar examples, not only in sports but also in other fields.

But have you ever imagined why people misinterpret such statements? Why do they think it can only be a man possessing exceptional records or leading a successful life? There are many factors behind this. One of them is language. Language has always helped us in communicating and expressing our feelings. It is an indispensable part of our lives, but it has also created some gender-biased notions. When language is gender-biased, it favours a particular gender over another. In English, the bias is usually the preference of the masculine over the feminine. We often use masculine nouns and pronouns to refer to both men and women. There are words which suggest that this is done by women only, for example, housewife. Some adjectives suggest gender-biasedness for example, Radium is a 'man-made' element, but it was invented by a woman Marie Curie. Words like air hostess suggest that only women do the job while the fact is, many men are also in this profession.

This is not something new or developed in recent times. It is a result of very old gender-biased thinking in this society. People have always thought of a profession or an activity associated with a particular gender. This has created norms such as this particular work is only for women or men, for example, people always think of a mechanical engineer to be a man and a nurse to be a woman. It creates a gender gap and deepens the roots of such norms in our society. If we consider both native and non-native languages, English is one of the most spoken language in the world and it has led to neglection of women in the society and her contributions are undermined. Such continuous negligence of women has led to their oppression, and because of such norms based on languages, women have been confined to professions which require tenderness and compassion such as housewives, nurses, maids, etc. while men are always considered fit for the jobs and activities which require strength and intelligence. This has hampered the growth of women for years.

Girls from an early age are to take care of their family, as in future they are expected to take care of their husband, children and house. These types of norms are more prevalent in backward and conservative countries than in the advanced ones. This was just about English, there are other languages also which are gender-biased. Recently a survey was conducted by researchers in which they examined 25 languages for gender biasedness and stereotypical notions. Danish came first among these 25 languages, while English and Hindi were at 6th and 12th places, respectively. Researchers found that such gender stereotypes discourage the efforts to narrow the gender gap in different career options, especially in science and technology.

If you look at the data on the development and upliftment of women in the last few decades, women have come a long way and have achieved a lot during all the years and are still moving ahead. It has been possible despite such biasedness and stereotypes created by language.

It shows that people are becoming more and more aware of such biases and stereotypes. The emergence of social media and it's popularisation has expedited this process of realisation and awareness. People can share their propaganda and views with many people at a time. In the last few years, it has also been observed that words and terms preferring women over men have become more common, for example, the word stewardess (earlier most people used steward for both genders). It is, however, not an ideal solution for removing such biases and stereotypes.

I believe that the ideal solution is to use gender-neutral language in our day to day communication, where we use nouns which are not gender-specific or suggest any particular profession or activity. People argue that the evolution of English has always been male-centric, usage of gender-neutral language can remove any such prejudices. In fact, we can see such developments taking place in the society. For example, most of the organisations today use chairperson instead of chairman or chairwoman.

One more solution is to use the third person pronouns while referring to someone whose gender we do not know beforehand. The gender-neutral language will help in abolishing such stereotypes created by use of gender-biased language. People around-the-world are encouraging the use of gender-neutral words in different languages, such as, Hebrew, in which gender-neutral endings for verbs and nouns have become more common. Hebrew is one of such example, others include Arabic, Spanish, German, French, Swedish and English. A gender-neutral language is a tool that makes people realise that how language has contributed in broadening the gender gap and we should promote its usage and endeavour to reduce such gender gap to realise our dream of a harmonious society.

# व्याकरणिक लिंग का समाजिक प्रयोग

गीतू कत्याल

फोटो: गूगल

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार-जेंडर महिलाओं, पुरुषो,लड़कियों,लड़कों की विशेषताओं को संदर्भित करता है, जो सामाजिक रूप से निर्मित है। इसमें एक महिला, पुरुष, लड़की या लड़का होने के साथ-साथ एक-दूसरे के साथ संबंध, मानदंड, व्यवहार और भूमिकाएं शामिल हैं। एक सामाजिक निर्माण के रूप में, लिंग समाज से समाज में भिन्न होता है और समय के साथ बदला जा सकता है। भाषा को हम ऐसे समझ सकते है कि अपने विचार, भावों को वाणी से अभिव्यक्त करना ही भाषा है। जो भी व्यक्ति बोलता है, उसे ही भाषा कहते हैं।

लिंग का अध्ययन करने के बाद हमें यह ज्ञात होता है कि लिंग 2 प्रकार के हैं, प्राकृतिक लिंग और व्याकरणिक लिंग। भाषा का सम्बन्ध व्याकरणिक लिंग से है। व्याकरणिक लिंग को हम भाषा में प्रयोग होने वाले लिंग के आधार पर समझ सकते हैं। प्रत्येक भाषा के लिंग विधान अलग-अलग होते हैं। हिंदी में दो लिंग पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हैं। संस्कृत, जर्मन आदि भाषाओं में 3 लिंग होते हैं, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग। व्याकरणिक लिंग प्राकृतिक लिंग से भिन्न होता है। व्याकरणिक लिंग का कोई तर्कसंगत आधार नहीं दिखता है। महर्षि पाणिनि ने लिंग निर्णय के लिए लोक व्यवहार को प्रमाणिक माना है। महर्षि पतंजलि इसके लिए बोलने वाले वक्ता की इच्छा को प्रमाण मानते है। व्याकरणिक लिंग को हम 3 प्रकार से समझ सकते है :-

**1. प्रत्यय योग से:** पुल्लिंग में प्रत्यय जोड़ने पर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। बालक-बालिका, मोर-मोरनी, घोड़ा-घोड़ी, हीरो-हीरोइन।

**2. स्वतंत्र शब्दकोश से:** पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए अलग-अलग शब्द है। माता-पिता, भाई-बहन।

**3. लिंग सूचक शब्दों का प्रयोग:** कुछ शब्दों का प्रयोग लिंग दर्शाने के लिए किया जाता है। नर-मादा, ही-शी, मेल-फीमेल।

**भारतीय भाषाएँ और जेंडर:**

विश्व में बहुत सी भाषाओं में व्याकरणिक रूप से लैंगिक भेदभाव देखने को मिलता है। हम जब अपने आस-पास की किसी भी वस्तु पर नज़र डालते है तो हमें समझ आता है कि हमने हर वस्तु को पुरुष और स्त्री बना दिया है। हिंदी में गैर-जीवित चीजों के लिए व्याकरणिक लिंग का इस्तेमाल होता है। हिंदी में ई से समाप्त होने वाली संज्ञा स्त्रीलिंग संज्ञाएं होती हैं जैसे: कुर्सी, लकड़ी, रोटी, खिड़की आदि। ए(आ) के साथ समाप्त होने वाली संज्ञा पुल्लिंग होती है जैसे बस्ता, कपड़ा, चश्मा आदि। अंग्रेजी में- it is bat, it is ball कहा जाता है, हिंदी में- बल्ला होता है, गेंद होती है कहा जाता है।

**भारत में हिंदी के साथ-साथ और भी भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। उन सभी भाषाओं में भी व्याकरणिक लिंग मौजूद है।**

**जैसे:**

**1.हिंदी में**

**लड़का होता है, लड़की होती है**

**2.पंजाबी में**

**कुड़ी होंदी है (अथार्त लड़की होती है), मुंडा होंदा है (अथार्त लड़का होता है)**

**3. हरियाणवी में**

**कुर्ता पेरा है (अथार्त कुर्ता पहना है), धोती पेरी है (अथार्त धोती पहनी है)**

**4. गढ़वाली में**

**नोनू होंद चू (बेटा होता है), ब्वारी होंद च (बहु होती है)**

**5. भोजपुरी में**

**लइकी लोग पढ़े में अच्छा होला (अथार्त लड़कियां पढ़ने में अच्छी होती है)**

**लइका लोग पढ़े में अच्छा होले (अथार्त लड़के पढ़ने में अच्छे होते है)**

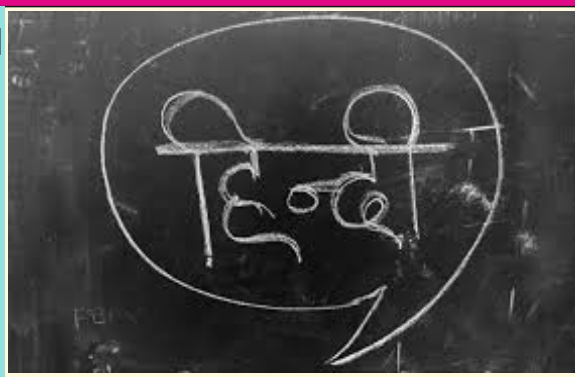


संस्कृत के एक ग्रन्थ **परिभाषेन्दु शेखर** में लिखा गया है: अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः (परिभाषेन्दु शेखर परिभाषा-122)। व्याकरण जगत में प्रसिद्ध इस सत्य के पीछे एक पूरी सामाजिक मानसिकता छिपी हुई है। इस सूत्र में लिखा गया है अगर किसी पंक्ति में से आधी मात्रा भी हटा दी जाती है तो उससे प्राप्त होने वाला सुख पुत्र सुख के समान है। संक्षेप वाक्य से प्राप्त होने वाले सुख को पुत्र सुख से जोड़ा गया है। इस सूत्र से भारतीय सन्दर्भ में जेंडर और भाषा की स्थिति-परिस्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है।

**क्या भारत को भी तटस्थ भाषा की जरूरत है?**तटस्थ भाषा को आम तौर पर ऐसी भाषा के रूप में समझा जाता है जिसमें किसी विशेष लिंग या सामाजिक लिंग के प्रति पूर्वाग्रह नहीं होता है। विश्व में बहुत से देश ऐसे हैं जो तटस्थ भाषा का प्रयोग करते हैं तथा बहुत से देश इस मार्ग की ओर अग्रसर है। चीनी और तुर्की जैसी भाषाओं में कोई व्याकरणिक लिंग नहीं है। जापानी भाषाओं में लिंग भेद नहीं मिलता। आस्कलोव और डाउन के अनुसार यूके, यूएसए, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे अंग्रेजी भाषी देशों ने लिंग विशेष शब्दों के बजाय लिंग- तटस्थ शब्दों का उपयोग करने के लिए एक ठोस प्रयास किया है उदाहरण के लिए :

कांग्रेसियों के बजाय - कांग्रेस के सदस्य

सेल्समैन के बजाय - बिक्री प्रतिनिधि

वेटर/वेटरेस के बजाय - सर्वर

होस्टेस के बजाय - फ्लाइट अटेंडेंट

बारमेड/ बरमान के बजाय - बारटेंडर

मिस्टर/मिस के बजाय - सम्मानीय बहुत से लोगों का यही कहना है की भाषा के मौजूदा नियमों और व्याकरण के साथ आगे बढ़ता रहना चाहिए। परंतु भारतीय भाषाओं में समस्या है उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसे समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं, हर परिवार का वातावरण, परिस्थिति अलग होती है। बाजार में खड़ी एक लड़की ने अपनी माँ से कहा, "मैं मोमोज खाऊंगा"। क्योंकि वह शुरू से ही खाऊंगा बोलती थी। उसकी माँ को इसमें कुछ अजीब नहीं लगा। परंतु पास में खड़ी एक औरत को "खाऊंगा" बोलना गलत लगा। औरत ने लड़की की माँ से कहा कि वह आगे से ऐसे बोलने पर डाटे आदि-आदि। औरत का लड़की की माँ को टोकना यह दर्शाता है कि हमारे समाज में व्याकरणिक जेंडर उपस्थित है। भारत की भाषाओं में सामाजिक प्रदर्शित होती है।

**मुण्डारी और मैथली एक मिसाल**

मैथिली, भारत की एक बोली है। मैथिली भाषा में व्याकरणिक लिंग का प्रयोग नहीं होता है। मुण्डारी भाषा में भी व्याकरणिक लिंग नहीं है। मुण्डारी और मैथली भारत में प्रयोग होने वाली तटस्थ भाषा में से एक है। भारत में तटस्थ भाषा के लिए अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाएगए है, पर अब जरूरत है। भारतीय समाज को भी लिंग समावेशी बनाने के लिए, हमें व्याकरणिक लिंग मुक्त भाषा का उपयोग करने की आवश्यकता है। हम इस तर्क को नहीं ठुकरा सकते की भारतीय भाषाओं को तटस्थ भाषा बनाने के प्रयास में बहुत से फेरबदल करने पड़ेंगे। व्याकरण के नियमों को संशोधित करना होगा। सालो से चल रही जेंडर वाली भाषा में बदलाव न केवल बच्चों के लिए कठिन होगा बल्कि बड़ों के लिए भी उतना ही जटिल होगा। भारत जैसे देश के लिए लिंग समावेशी रास्ता अपनाना आसान नहीं है, पर नामुमकिन भी नहीं है। यह कदम न केवल भाषा में लैंगिग रूढ़िवादिता को खत्म करने में सहायता करेगा बल्कि समाज में लिंग समस्या को भी कम करने में सहायता करेगा। भारत की विभिन्नता देखते हुए जेंडर और भाषा पर निष्कर्ष निकालना आसान नहीं है। अगर मैं खुद की ही बात करू तो तटस्थ भाषा में बात करना मेरे लिए भी बहुत कठिन होगा, परंतु धीरे-धीरे प्रयास कर मैं तटस्थ भाषा को बिना किसी बाधा के बोल पाऊँगी। बहुत प्रसिद्ध पंक्ति है कि :- "मेरी सारी सफलता मेरी असफलताओं पर बनी है।" हमें भी जरूरत है कि हम इस पंक्ति से सीखे और भारतीय भाषाओं को तटस्थ भाषा बनाने की ओर अग्रसर हो चले। धीरे-धीरे परिवर्तन कर एक दिन हम भाषा लिंग भेद समस्या से आजाद हो जाएंगे।

**उठो, चलो, बढ़ो**
**भाषा को निष्पक्ष बनाए।**
**परिवर्तन समय का नियम है,**
**उसे अब स्वीकार करें।**
**भारतीय भाषाओं को**
**अब हम सब मिलकर**
**तटस्थ भाषा की**

# भाषा का लैंगिक भेदभाव

विकास त्रिपाठी

प्राचीन कालीन भारतीय समाज हमेशा से स्त्री और पुरुषों के बीच भेदभाव करता रहा है। शक्ति और बल के प्रयोग वाले कार्यों में पुरुषों को स्थान दिया गया है, जबकि स्त्रियों को कोमल और घरेलू कार्यों में स्थान दिया गया है। ऐसे में जब आधुनिक समाज में स्त्रियों ने घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारियां उठानी शुरू की तो प्रश्न उठा कि क्या भारतीय भाषाएं स्त्रियों के साथ पेशेवर कार्यों के मामले में न्याय करेंगे?

इस कार्य में भारतीय भाषाएं पिछड़ते हुए दिखती हैं। अधिकतर पेशेवर कार्यों को विदेशी भाषा से शब्द लेकर इंगित किया जाता है। इंजीनियर, डॉक्टर, नर्स, फ्लाइट-अटेंडेंट, टीचर, जर्नलिस्ट, एंकर जैसे शब्दों को इनके हिंदी पर्यायवाची के बजाय अधिक से अधिक प्रयोग में लाया जा रहा है। इससे एक अलग प्रकार का भ्रम पैदा होता है। विदेशी भाषाओं में इन शब्दों का एक विशेष लिंग के साथ संबंध है, इस वजह से इन कार्यों को भी एक विशेष लिंग के साथ जोड़ दिया जाता है। इंजीनियर और डॉक्टर जैसे पदों के लिए पुरुषों को प्रमुखता दे दी जाती है, जबकि नर्स और टीचर जैसे पदों के लिए महिलाओं को प्रमुखता दी जा रही है।

इन सबके बीच, हिंदी भाषा अभी भी इन पेशेवर कार्यों को उचित शब्द देने में लगा हुआ है। एक उदाहरण लेते हैं, शिक्षक शब्द हिंदी में टीचर की जगह प्रयोग किया जाता है लेकिन इसके पुलिंग होने के कारण स्त्रियों के साथ प्रयोग किए जाने वाले शब्द को बदलना पड़ेगा। इस कार्य के लिए हिंदी ने स्वयं की पद्धति विकसित करने के बजाय अरबी भाषा में प्रयोग की जाने वाली पद्धति को अपना लिया। 'अ' शब्द के साथ पुलिंग को और 'ई और ईका' शब्द के साथ स्त्रीलिंग को जोड़ दिया गया। शिक्षक का स्त्रीलिंग शिक्षिका कर दिया गया, अध्यापक का स्त्रीलिंग अध्यापिका कर दिया गया। पंडित का पंडिताइन, सेठ का सेठानी जैसे परिवर्तनों से हिंदी शब्दकोश भरा पड़ा है। यह इशारा करता है कि हिंदी भाषा में पेशेवर कार्यों को पुलिंग के साथ जोड़ दिया था, आज का समाज इसे बदलने में लगा हुआ है।

फोटो: गूगल

भारतीय भाषाओं के विकास का क्रम देखने पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें पुरुष प्रधानता को सबसे ऊपर रखा गया है। स्त्रीलिंग और तीसरे जेंडर को भाषा में कम स्थान दिया गया है। स्त्रीलिंग को दोयम दर्जे का मानकर इन्हें पुरुषों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तु के समान रखा गया है। ऐसे में जब आज के आधुनिक दौर में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, भाषा को भी जरूरत है कि यह अपने पितृसत्तात्मक तरीकों को छोड़े और एक समान और न्याय पूर्ण बदलाव की ओर आगे बढ़े। स्त्रियों को भाव और संवेदना से आगे बढ़कर, कार्य और योग्यता के आधार पर दर्जा दिया जाए।

आज की जरूरत है कि तीसरे जेंडर को समाज में वह अधिकार मिले जो संवैधानिक और सभ्य समाज के लिए उचित हो। तीसरे जेंडर के लोगों को सामान्य मानवीय अधिकारों से दूर न किया जाए। इस कार्य को करने के लिए सबसे पहले उनके साथ प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को बदला जाए। ऐसे शब्द जो एक सभ्य समाज के लिए गलत माने जाते हैं उन्हें तीसरे जेंडर के साथ न जोड़ा जाए।

इन कार्यों को करने में हमें कई भाषाओं से प्रेरणा लेनी पड़ेगी। भाषाई विकास के क्रम में, स्त्रीलिंग और पुलिंग के अंतर की बजाय ऐसे शब्दों को प्रयोग करना पड़ेगा जो इस विभेद को कम दर्शाए। इसके लिए अंग्रेजी भाषा में एक अनूठा प्रयोग किया है। आज एलजीबीटीक्यूआई समुदाय के कुछ लोग अपने सर्वनाम के लिए 'दे' और 'दैम' का प्रयोग करते हैं,जो नपुंसक लिंग है।

आधुनिक समाज में यह प्रयोग उचित मालूम पड़ता है। भारतीय भाषाओं को चाहिए कि वह भी समय के साथ स्वयं को ढालने की कड़ी में, इस प्रकार के कुछ प्रयोग करें। ऐसा करने से आज का युवा जो पश्चिमी भाषाओं की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहा है, भारतीय भाषाओं की तरफ ध्यान देगा। उन्हें सीखने-समझने का प्रयास करेगा। एक न्यायसंगत भाषा से ही न्यायपूर्ण समाज की परिकल्पना की जा सकती है।

फोटो: गूगल

# The Role of Movies and Tv Shows in Shaping Gender Roles

Photos: Pinterest

Kalyani Bhatnagar

Gender sensitization means educating and making people aware of their thought patterns and behaviours, so that all genders are treated equally. The ways in which people treat men and women differently under various circumstances, such as with respect to careers and life decisions, is sometimes based on deeply rooted notions and stereotypical ideas about a particular gender. However, these notions about a specific gender, which people firmly believe to be true and indisputable, might actually be without any basis, and could just be a result of being influenced by parents, relatives, the media, and other social interactions. It is an important aspect of gender sensitization campaigns to create awareness and to inspire people to dispel these faulty notions.

One way to achieve this is to start by examining the sources of these ideas. In India, films and TV shows are a dominant source of entertainment for crores of people in the country. Unfortunately, majority of the films in India have reinforced the stereotypes of behaviour of male and female genders. Since these films were highly successful at the box office, this became a set formula for a lot of films that were made. This was regardless of the fact that they were perpetrating and establishing these gender notions, which were harmful to the society.

The hero was shown to be stalking, teasing and troubling the heroine. This behaviour is taken to be normal, masculine behaviour. Rather than objecting to it, the heroine, after initial resistance, is shown to fall in love with the hero. In 'Sholay', Veeru tries to win the love of the tonga driver Basanti, while singing the song 'Koi haseena jab rooth jati hai to aur bhi haseen ho jati hai'. He jumps on her tonga and grabs her from behind. She throws him off the tonga, but he climbs back and continues to harass her. In 'Badrinath ki Dulhaniya', the male lead chases the uninterested heroine, singing 'Tune English mei jab humko daanta, to aashiq surrender hua, pyaar se maara gaalon pe chaanta to aashiq surrender hua'. In the movie 'Mohabattein', Shah Rukh Khan teaches his students to pursue the girls relentlessly, even if their actions cause the girls mental distress.

These types of films send out a dangerous message that such behaviour is secretly liked by women, who may initially say 'No', but will get attracted to the man eventually. The young boys in the society start emulating the hero in the belief that they will become popular with girls. Thus, Indian movies play a role in normalizing stalking of women.

Over the years, many TV serials such as 'Kyunki Saas Bhi Kabhi Bahu Thi', 'Kumkum Bhagya', 'Sasural Simar Ka' created a stereotypical image of the ideal Indian housewife wearing traditional Sarees with ornate jewellery, holding a plate with flowers and a lamp, praying for her husband's well-being. An ideal mother is portrayed as sacrificing her own individuality, and fulfilling her domestic responsibilities towards the family. In 'Sasural Simar Ka', Simar dreams of becoming a dancer, but her conservative parents want her to marry. These serials give a message to girls how to become obedient daughters and daughters-in-law. It is assumed they will receive bare minimum education, will not have professional careers, and their sole purpose is to look after the household. These are seriously flawed notions about the female gender, far removed from real life in which women have proved themselves in professional domains as well. Yet, it is also true that movies which broke gender stereotypes have been made. 'Hunterwali', made in 1935, shows the story of a princess as a masked crusader. This highly successful movie played a big role to orient the society. The heroine became a cult icon. She did stunts, which was not expected from a gentle woman, and thus emerged as a feminist icon of Hindi cinema. This movie also challenged the conventional patriarchal order. More recently, the movie 'Queen' is an important film dealing with feminism. Rani is an innocent girl for whom life is about learning to run a house and getting married. Her thinking is narrow and determined by the society which places primary importance of marriage in a girl's life. Once her marriage is cancelled; she takes a decision to go for her honeymoon all by herself. She meets various people and has new experiences as she travels abroad. In the process, Rani discovers herself. She realises that she must live for

Photos: Google images

her happiness and take charge of her life.

The movie 'Pink' is another such work which addresses these topics maturely. This film is a reflection of the discriminatory, preconceived notions prevalent in our society, about a woman's character. The story shows three working girls who stay in an apartment, away from their families. The neighbours feel that the girls are of low morality because they come home late, wear short dresses, consume alcohol and go for late night parties. Sometimes they are visited by men. The boys, who the girls meet at a concert, also make a judgement about them. They assume that their sexual advances will be welcomed, because they believed that any girl who goes for late night parties, wears western outfits, laughs freely, and mingles with the opposite sex, signals to a man to make sexual advances to her. Over the years, erroneous notions have been built that a girl may be saying 'no', but in her heart she is pleased and wants the man to pursue her. This leads the boys to molest these girls. Through the medium of 'Pink', we realize that in today's modern society, girls have developed independent thinking, and want to live as free individuals, and this is not because they have lost their morality.

These movies are a welcome change to dispel the erroneous notions related to gender roles. Movies and serials should be more realistic, and should also highlight different aspects in women's lives, showing them to be bold, independent. They should also show that women are as aspirational and as successful in their professional careers, as their male counterparts. Due to their massive outreach, films and TV serials are capable of influencing a large number of people, and shaping the gender notions in the society. If these media are used responsibly, they could be very helpful in promoting equality among us.

# बचपन से हो लैंगिक संवेदीकरण

आशु

लिंग संवेदीकरण बहुत ही आम संदर्भ का विषय है। व्याख्या के तौर पर देखा जाए तो यह केवल कुछ सामाजिक तय सिद्धांतो तक सीमित रह जाता है। अगर हम इस विषय को ध्यान से देखे तो इस विषय की जड़ हमारे मूल में ही विद्यमान है। उदाहरण के तौर पर, हम लिंग के प्रति रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी बातों को ही देख सकते है। लिंग के प्रति भेदभाव लोगो के मन में इस प्रकार बस गए है कि लोग उनको भेदभाव मानते तक ही नहीं है। लिंग के प्रति एक ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है, जिससे समाज में हो रहे इस भेदभाव को कम किया जा सके। एक नए संशोधन की आवश्यकता है जो पूरे अंतर्मन से हो। पूरे हृदय से इस बदलाव के लिए आवाज़ उठनी चाहिए। इस आवाज़ को एक नए स्वर की जरूरत है। जरूरत है, इस विषय पर और भी खुलकर बात करने की। ये आवाजें पुरुषों के ख़िलाफ़ महिलाओं को खड़ा करने के बारे में कतई नहीं है। बल्कि ये स्थापित करने के लिए है कि समाज में यह दोनों लिंग ही समुदाय के सदस्य है।

लैंगिक जागरूकता पितृसत्तात्मक तथा मातृसत्तात्मक पृथकीकरण से परे तथा उससे कहीं अधिक ऊपर, केवल बौद्धिक विचारों की समानता के लिए है। जिस प्रकार बचपन से ही बच्चों को यह सिखाया जाता हैं कि 'तुम लड़के हो तो नीला (ब्लू)रंग तुम्हारे लिए है और लड़कियों के लिए गुलाबी (पिंक) रंग चिन्हित किया जाता है। अब अगर हम इस बात कि तरफ ग़ौर करे तो देखने में तो बहुत ही सरल सी बात लगती है। परंतु यही छोटी-छोटी बातें आगे चलकर भेदभाव व अन्य अपराधों तक कि वजह बनती है। लड़कियों को खेलने के लिए डिनर सेट तथा चुन्नी और लड़कों को कार और बैट ही क्यों दिया जाता है? और अगर लड़का रोता भी है तो उसे यह कहा जाता है कि- क्या लड़कियों कि तरह रोता है। क्या इसका मतलब ये हुआ कि लड़कियां कमज़ोर होती है, जो रोती हैं? और कभी लड़के को चोट भी लग जाए तो उसे ये कह

कर बहलाया जाता है कि 'मर्द को दर्द नहीं होता'। पुरुष,समाज में अपना औहदा ऊंचा करने के लिए इसी बात को साबित करने में लगे रहते हैं कि वह शक्तिशाली हैं और वह स्त्रियों कि तरह रोता नहीं हैं और न ही वह कमजोर हैं। किन्तु अगर बात करें शक्तिशाली होने कि तो विज्ञान के अनुसार एक स्त्री में पुरुषों की अपेक्षा दर्द को सहन करने की ज्यादा शक्ति होती है। तभी ईश्वर ने गर्भधारण कि शक्ति एक स्त्री को दी। एक स्त्री को प्रसव के दौरान बीस हड्डियों के टूटने जितना दर्द सहन करना पड़ता है, जो कि एक असामान्य बात है।

फोटो: गूगल

**संविधान में लैंगिक समनता का प्रावधान :-**

अनुच्छेद 14 में कानून में मर्द व औरत दोनो को समानता प्रदान की गई है।
अनुच्छेद 15 में लिंग, जाति या नस्ल इत्यादि के आधार पर भेदभाव निषेध किया गया है।
अनुच्छेद 16 में सार्वजनिक रोज़गार में अवसर प्रदान करने कि समानता की बात कही गई है।

परंतु इस विषय में हमारा देश अब भी काफ़ी पीछे है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य सत्यव्रत पाल के अनुसार- इन आंकड़ों से केवल नज़रे झुकाने से काम नहीं बनेगा। इतने व्यवस्थित नरसंहारों का न होना तभी मुमकिन है, जब समाज के साथ सरकार भी इस के लिए ठोस कदम उठाए। देखा गया है कि कुछ परिवारों में बहनों को उनके भाइयों से कम भोजन मिलता है, कम शिक्षा मिलती है। लड़कियों के प्रति हिंसा और लड़कों दी गई प्राथमिकता, शुरू से ही दोनों में इस भावना का बीज बो देती है कि पुरुषों को स्त्रियों कि तुलना में सामाजिक वरीयताएं अधिक मिलती है। लिंग संवेदीकरण में समाज का विश्वास होना चाहिए। एक-दूसरे के प्रति समानता और आदर कि भावना होनी चाहिए। लड़के व लड़कियों को एक-दूसरे की भावना को जानना व समझना आना चाहिए। लड़के व लड़कियों को समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। हमें अपनी पुरानी रूढ़िवादी मान्यता को छोड़, अच्छे विचारों को अपनाना चाहिए।

आय-दिन हम बलात्कार से जुड़ी कोई ना कोई घटना अखबारों में पढ़ते हैं, इसी से सबंधित मैने कुछ पंक्तियां लिखी है_

शर्म-लाज की हार हुई है।
दु: शासन - दुर्योधन की भरमार हुई है।
कब तक मौन रहेंगे हम सब ?
फिर एक दौपदी शर्मशार हुई है।

हमारे शास्त्रों में नारी को देवी का दर्जा दिया जाता है...

**"यत्र नारिस्तु पूज्यंते राम्यते तत्र देवता"**

यह केवल कथन न बनकर रह जाए। इस कथने को समाज को अपनाना चाहिए। लिंग संवेदीकरण जैसे विषय को सामान्य से परे गंभीर अर्थ में लेना चाहिए। हमारे वर्तमान के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' को प्रोत्साहित करते है। आज के संदर्भ में महिलाएं पुरुषों से कही पीछे नहीं हैं।

**"जब है नारी में शक्ति सारी,**
**तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी"**

# नारी

कृष्ण पटेल

मैं हूं तो कल है।
ये कला, ये सिद्धि, साहित्य, ये वृद्धि
बिना मेरे हर यज्ञ विफल है।
मैं पालक, मैं कर्ता, मैं काम, मैं भर्ता
मुझ बिन गंगा भी मात्र जल है।
मैं हूं तो कल है ।।

ऊर्जा का तेज, त्याग की तपस, तप की ज्वाला
हां मैं तो कीचड़ में कमल हूं।
साहिलमें किनारा, मै मोती की धारा
मैं चांद ओर रवि में भी उज्ज्वल हूं।
है मैं ही तो कल हूं।।

मैं धर्म, मैं धैर्य, मैं पोरुष, मैं शौर्य
मुझ बिन अधूरा संसार सकल है।
मैं महादेव का कहर, मैं समंदर की लहर
मुझ बिन घर, घर नहीं मात्र स्थल है।
मैं हूं तो कल है।।

तरकारी का स्वाद, खेत में खाद, खपड़े का आवास
मैं खेत में किसान का हल हूं।
लड़खड़ाकर गिरी फिर भी सूक्ष्म तरल हूं।
हां मैं ही तो कल हूं।।

मुझको साथ क्या पाए वेद-पुराण, साहित्य इत्यादि
मेरा-अस्तित्व जग में अनंत अनल है।
शोषण, पोषण लाचारी भूख जुल्मसब रिश्तेदार मेरे
परेशान देख कैसे हर युधिष्ठिर में छल है ।
मैं हूं तो कल है।।

बेबस, परस्त, मूक-मायूस, सदा सी ज़मी में
पर जाने क्यों मैं जीवसरल हूं।
इस विपुल, निपूर्ण, जटिल, जलज समाज में
हर सदी दशक में मैं प्रबल हूं।
हां हां मैं ही तो कल हूं ।।

फोटो: गूगल

# यादें

शिवानी मिश्रा

तुमने कहा था कि चाहते हो तुम मुझे,
तुमने कहा था कि साथ न छोड़ोगे कभी।
पर न जाने ऐसा क्या हुआ
कि यूं बिन बताए चले गए कहीं।
कितने बेहतरीन दिन थे न वो
जब हम साथ थे।
सारी दुनिया से दूर,
पर एक-दूजे के पास थे।
घंटो यूंही बात करते,
लफ्जों से नहीं तो आंखों से इज़हार करते।
कभी मुस्कुराते, कभी शरमाते,
कहना जो होता, इशारों में ही समझ जाते।
हां, वह अलग ही दिन थे,
हां, वह बड़े ही बेहतरीन थे।
पर देखो न ये क्या हुआ,
अब न वह दिन शेष है
और न ही तुम।
लोगों के लिए शायद मैं अब भी खुश हूं।
पर वे न जाने क्यों, जाने से तुम्हारे।
भीतर ही भीतर मैं कितनी गुमसुम हूं।
अब लौट भी आओ न तुम,
छोड़ कर न यूं जाओ तुम।
याद में तुम्हारे अब
यूंही खोए रहते हैं हम।

फोटो: गूगल

## Conveners

Dr Shruti Anand
Convener

Ms Deepshikha Kumari
Co-convener

Dr Manvesh Nath Das
Member

Dr Ritu Vats
Member

Dr Nidhi Chandra
Member

Dr Kuldeep Singh
member

## Gender Champions

Jennis Jacob
BA(H) English

Saijal Bajaj
BSc(H) Stats

Lavangi Bhalla
B.Com(H)

Nandani Lavanya
BA(H) Pol.sc

Saavy Gupta
BA Programme

Rishita Parashar
BA Programme

Kalyani Bhatnagar
BA Programme

Ruparna Chakravarty
BA(H) English

Chingakham Lily Chanu
BA Programme

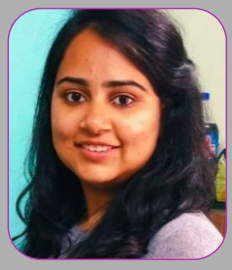

Kriti Chopra
BSc(H) Stats.

Abhishek Kumar
BMS

Ravi
BA(H) Hindi

## E-Journal Editors

Vikash Tripathi
BJMC

Palak Arora
B.Com(H)

Shravani Upadhaya
BA(H) English

Anjali
BA(H) Hindi